# सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-42, अंक-05, कुल पृष्ठ-36, माघ-फाल्गुन, विक्रम सम्वत् 2081, फरवरी, 2025

## महाकुंभ में सेवा कार्यों की होड़

झंडेवाला माता मंदिर द्वारा महाकुंभ में लगाया गया चाय का एक शिविर

उद्योगपति गौतम अडानी की सहायता से इस्कॉन द्वारा भोजन सेवा

कार्ष्णि ऋषि के शिविर में भोजन प्राप्त करने के लिए खड़े भक्त

नेत्र कुंभ में नेत्र चिकित्सा करते चिकित्सक

दंत कुंभ में चिकित्सा कराता एक भक्त

नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के शिविर में कृत्रिम अंग दिखाते एक कार्यकर्ता

# प्रयागराज में नेत्र सेवा

प्रयागराज में महाकुम्भ नगर में नेत्र कुम्भ में नेत्र चिकित्सा सेवा अपने उत्कर्ष पर है। प्रतिदिन हजारों लोगों के नेत्रों की जांच वरिष्ठ नेत्र रोग चिकित्सक कर रहे हैं। मरीजों को चिकित्सकीय परामर्श के साथ ही नि:शुल्क चश्मा भी दिया जा रहा है। अब तक करीब 90 हजार लोग नेत्र कुम्भ में चिकित्सा सेवा का लाभ ले चुके हैं। सामाजिक संस्था 'सक्षम' और अन्य सहयोगी संस्थाओं के कार्यकर्ता नेत्र रोगियों की सेवा में जुटे हैं। नेत्र कुम्भ का समापन 26 फरवरी को होगा, तब तक चिकित्सा सेवा निर्बाध गति से चलती रहेगी।

'सक्षम' के नेतृत्व में नेत्र कुम्भ का संचालन हो रहा है। आयोजन में द हंस फाउंडेशन, स्वामी विवेकानंद हेल्थ मिशन सोसाइटी, नेशनल मेडिकोज आर्गेनाइजेशन एवं राष्ट्रीय सेवा भारती जैसी संस्थाएं सहयोग दे रही हैं। सक्षम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री चंद्रशेखर के अनुसार नेत्र कुम्भ में पांच लाख लोगों के नेत्रों की जांच एवं तीन लाख नेत्र रोगियों को नि:शुल्क चश्मा देने का लक्ष्य रखा गया था। हम लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। प्रतिदिन हजारों लोगों की आंखों की जांच की जा रही है। जांच में मोतियाबिंद के मरीजों को ऑपरेशन की सलाह दी जा रही है। ऑपरेशन मरीज के घर के निकटवर्ती अस्पताल में होगा। वहीं, आवश्यकता के अनुसार नेत्र रोगियों को नि:शुल्क चश्मा भी दिया जा रहा है। मुख्य स्नान पर्व के दिन भी बड़ी संख्या में लोग नेत्र कुम्भ में आए।

नेत्र कुम्भ का आकर्षण विशिष्ट लोगों में भी कम नहीं है। वे लोग संगम के पवित्र जल में डुबकी लगाने के साथ ही नेत्र कुम्भ का भी अवलोकन कर रहे हैं। विशिष्ट लोगों में जूना अखाड़ा के पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरी जी, निरंजनी अखाड़ा के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी कैलाशानंद गिरी जी, इस्कॉन के राधानाथ स्वामी जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. गोपाल कृष्ण, तिब्बती धर्म गुरु और दलाईलामा के उत्तराधिकारी, हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ला, उत्तर प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, राजस्थान के पूर्व राज्यपाल कलराज मिश्र, प्रसार भारती के अध्यक्ष नवनीत सहगल, मेजर जनरल राजेश भट्ट आदि शामिल हैं। सभी लोगों ने नेत्र कुम्भ के आयोजन की प्रशंसा की है। नेत्र कुम्भ संभवत: दुनिया का अब तक का सबसे बड़ा नेत्र चिकित्सा सेवा का आयोजन है। महाकुम्भ 2025 को नेत्र कुम्भ के आयोजन के लिए भी याद रखा जाएगा। देश के वरिष्ठ नेत्र रोग चिकित्सक भी नेत्र कुम्भ के सहभागी बन चुके हैं। ❐

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

*सम्पादक*
डॉ. शिवाली अग्रवाल

**कार्यालय**
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाषः 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

# सेवा समर्पण

वर्ष-42, अंक-05, कुल पृष्ठ-36, फरवरी, 2025

## विषय - सूची

| शीर्षक | लेखक | पृ. |
|---|---|---|
| संपादकीय | | 4 |
| महाकुंभ में सेवा कार्यों की होड़ | हरि मंगल | 6 |
| जहाँ शिव, वहाँ आनन्द | इन्दिरा मोहन | 11 |
| नागरिक कर्तव्य एवं शिष्टाचार | मानवेन्द्र | 12 |
| ज्ञेय, ज्ञाता और ज्ञान | डॉ. पी. के. झा | 15 |
| सेवाभूमि दिल्लीः इंद्रप्रस्थ चिकित्सा सेवा यात्रा | प्रतिनिधि | 16 |
| ज्ञानी कौन! | | 19 |
| अपने बच्चों को सुसंस्कारी बनाएं | दुर्गा शंकर त्रिवेदी | 20 |
| स्वामी विवेकानंद और सेवा भारती | प्रतिनिधि | 21 |
| कहानी : रहस्य | आशीष शुक्ला | 23 |
| महकते फूलों का पर्व बसन्त | गंगा प्रसाद 'सुमन' | 24 |
| हरी पत्ती खाने के लाभ | रितेश | 25 |
| सत्येंद्र नाथ बोस के नाम पर है बोसन परमाणु | | 27 |
| कविता : सेवा भारती का दीपक जलता रहे सदा | रंजीत दीक्षित | 27 |
| धूमधाम से मना गणतंत्र दिवस | | 28 |
| मकर संक्रांति पर पंचकुंडीय हवन | | 29 |
| सामूहिक विवाह के कार्यक्रम | | 30 |

### पाठकों से अनुरोध

**सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।**

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाषः 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

# अभावों पर भारी आस्था

प्रयागराज में मकर संक्रांति से महाकुम्भ विधिवत् प्रारम्भ हो गया है। लोग व्यक्तिगत अभावों के बावजूद कई-कई किलोमीटर तक पैदल चलकर आस्था की एक डुबकी लगाने के लिए चले आ रहे हैं। हालांकि इस बीच एक दुर्घटना भी हुई, जिसमें 30 श्रद्धालुओं की मृत्यु हो गई। निश्चित रूप से यह घटना बहुत ही दुखदायी है। इस घटना को छोड़कर महाकुंभ को देखें तो अंदाजा लगेगा कि आस्था सभी अभावों पर भारी पड़ती है। यह भारत के लोगों की अनुपम श्रद्धा का ही उदाहरण है कि लाखों देशवासी स्व-प्रेरणा से तथा बिना किसी संगठित सूचना-प्रयास के इतनी बड़ी संख्या में एक स्थान पर एकत्रित हो जाते हैं।

बता दें पूर्ण कुम्भ प्रयाग, नासिक, उज्जैन तथा हरिद्वार में प्रत्येक बारह वर्ष में एक बार होते हैं। इन महाकुम्भों की स्थितियां अपने सौरमण्डल के शुभ-ग्रह बृहस्पति की स्थिति पर निर्भर करती है। बृहस्पति देवताओं के गुरु हैं अर्थात् मनुष्य में जो भी दैवी-गुण होते हैं, उनके अधिष्ठाता हैं। समुद्र-मंथन के बाद जब अमृत प्रकट हुआ तो राक्षसों और देवताओं में इसे पाने के लिए संघर्ष छिड़ गया। गरुड़ जी अमृत-घट को छिपाने के लिए उसे ले उड़े। उस समय बृहस्पति उस अमृत-कुम्भ की रक्षा कर रहे थे। सूर्य देव यह देख रहे थे कि भागमभाग में कलश कहीं टूट न जाए और चन्द्रदेव चौकसी कर रहे थे कि पात्र में से अमृत छलके नहीं। फिर भी अमृत-कुम्भ में से चार बूंदें टपक ही गईं। ये चार बूंदें नासिक, हरिद्वार, उज्जैन और प्रयाग में टपकीं। इसलिए इन चारों स्थानों पर पुनः अमृत प्रकटाने के लिए कुम्भ पर्व आता है तथा बृहस्पति, सूर्य व चन्द्र की विशेष स्थितियों में ये पर्व आते हैं।

हमारे भचक्र में बारह राशियां हैं। सूर्य हर राशि में एक महीने रहते हैं अर्थात् साल भर में सभी राशियों का भ्रमण कर लेते हैं। बृहस्पति एक राशि में एक वर्ष तक रहते हैं, याने बारह साल में सभी राशियों पर घूम लेते हैं। इस प्रकार घूमते हुए बृहस्पति (1) वृष राशि में होते हैं तो प्रयाग में महाकुम्भ होता है (2) तीन वर्ष बाद जब सिंह में होते हैं तो उज्जैन में (इसीलिए उज्जैन के कुम्भ को सिंहस्थ भी कहा जाता है)। (3) इसके तीन वर्ष बाद जब वृश्चिक राशि में होते हैं तो नासिक में और (4) कुम्भ राशिस्थ होने पर हरिद्वार में पूर्ण कुम्भ का आयोजन होता है। लेकिन बृहस्पति तो एक राशि में वर्ष भर रहते हैं, इसलिए कुम्भ की तिथियों का निर्णय सूर्य व चन्द्रमा की स्थिति से होता है।

बृहस्पति के वृष राशि में होने के साथ-साथ सूर्य जब मकर राशि में आ जाएं तब प्रयाग में कुम्भ का प्रारम्भ होता है। बृहस्पति के सिंह राशि में होने के समय जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करे तो उज्जैन में, वृश्चिक राशिस्थ बृहस्पति के समय जब सूर्य कर्क राशि में हों तो नासिक में तथा कुम्भ के बृहस्पति की अवधि में सूर्य के मकर राशि में होने पर कुम्भ पर्व हरिद्वार में आयोजित होता है।

वैज्ञानिकों ने कुम्भ पर्व के विषय में काफी शोध किया है। उनकी राय है कि इसका संबंध सौर-विज्ञान से है। गंगा, गोदावरी व क्षिप्रा नदियों के जल में सूर्य की किरणों का कुम्भ के समय की ग्रहों की स्थिति का विशेष प्रभाव पड़ता है। इन ग्रह स्थितियों में उक्त नदियों के जल में एक विशेष प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न हो जाती है और इसलिए उस समय इनमें स्नान का विशेष लाभ होता है। विज्ञान की धारणा अपने स्थान पर ठीक है, किन्तु इन पर्वों के सामाजिक और राष्ट्रीय संदर्भ बड़े विलक्षण हैं। तीन वर्ष में एक बार समूचे देश के सामान्य व विशिष्ट जनों का एक तीर्थ-स्थान पर इकट्ठा होना राष्ट्रीय एकात्मता के लिए संजीवनी का काम करता है। लगभग एक माह तक इकट्ठे रह कर समाज का नेतृत्व इन स्थानों पर पुनः विचार मंथन करता है और उसमें से प्रकट होने वाले अमृत-कणों को पूरे देश में ले जाता है।

भारत का राष्ट्र जीवन हजारों वर्षों का है। आश्चर्य की बात है कि जब देश में आवागमन और संचार के आधुनिक साधन नहीं थे, तब भी सम्पूर्ण भारत के लोग आपस में जुड़े हुए और एक राष्ट्र होने का भाव कैसे अनुभव करते थे? आसेतु-हिमालय तक विस्तृत इस देश के लोगों में एकात्मता और राष्ट्रीयता का भाव कैसे उत्पन्न होता था? इसका उत्तर कुम्भ जैसे आयोजनों में मिल जाता है। कुम्भ जैसे अवसरों पर पूरे देश के लोग एक साथ, एक समय पर, एक उद्देश्य को

लेकर इकट्ठे होते थे। पवित्र नदियों में गोता लगाने के साथ-साथ वे एक-दूसरे से मिलते थे, समाचार देते और लेते थे, एकात्मता का अनुभव करते थे तथा एक राष्ट्र होने का भाव लेकर विदा होते थे। कुम्भ-स्थलों की यात्रा भी अधिकतर पैदल, बैल गाड़ी, घोड़ों या रथों पर होती थी। इस लम्बी अवधि की यात्रा में भी स्थान-स्थान पर पड़ाव डालते हुए तीर्थ-यात्री पूरे देश के साथ एकात्मता स्थापित करते थे।

यह भी विधान था कि समाज का नेतृत्व करने वाले श्रेष्ठ पुरुष कुम्भ के अवसर पर आएं। समाज को दिशा देने वाले ये संत, संन्यासी, ऋषि-मुनि तथा धर्माचार्य आपस में मिलकर सम्पूर्ण समाज की स्थिति पर विचार करते थे। ऐसी धर्म-सभाओं में समाज के गुण-दोषों पर विचार होता था। सम्पूर्ण समाज को स्वस्थ एवं एकात्म बनाए रखने के लिए आचरण में लाए जा सकने वाले नियम भी तय किए जाते थे। यही धर्म संसद कहलाती थी तथा राष्ट्र की 'आत्मा' धर्म को ठीक से आचरण में लाने का मार्ग दिखाती थी। धर्म-संसद धर्माचरण को सुनिश्चित करती थी और समाज की सर्वोच्च नीति-निर्धारण करने वाली संस्था के रूप में कार्य करती थी।

**वैज्ञानिकों ने कुम्भ पर्व के विषय में काफी शोध किया है। उनकी राय है कि इसका संबंध सौर-विज्ञान से है। गंगा, गोदावरी व क्षिप्रा नदियों के जल में सूर्य की किरणों का कुम्भ के समय की ग्रहों की स्थिति का विशेष प्रभाव पड़ता है। इन ग्रह स्थितियों में उक्त नदियों के जल में एक विशेष प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न हो जाती है और इसलिए उस समय इनमें स्नान का विशेष लाभ होता है।**

काल-क्रम में इसमें व्यवधान आया तो आद्य शंकराचार्य ने पुनः इसे प्रारम्भ किया। उन्होंने तीन साल में एक बार होने वाले महाकुम्भ के अवसर पर हिन्दू समाज के सभी पंथों के प्रमुखों के एकत्र होने का क्रम फिर से शुरू किया। सभी पंथों के प्रमुख कुम्भ-स्थल पर आएं तथा समाज की स्थिति पर विचार-विमर्श करें, यह आद्य शंकराचार्य के प्रयत्नों से चलने लगा। सम्राट हर्षवर्द्धन के समय तक लगभग आठ सौ वर्ष तक कुम्भ-महापर्व पर धर्म-संसद आयोजित होती रही। इसीलिए समाज स्वस्थ एवं सबल बना रहा। तुर्क हमलावरों से लगातार संघर्ष के कारण इसमें फिर व्यवधान आया, किन्तु महाकुम्भ मनाए जाने का क्रम नहीं टूटा। बिना किसी सूचना, बिना किसी प्रचार के और आवागमन के सीमित साधनों के बाद भी लाखों देशवासी कुम्भ के अवसर पर एकत्र हो राष्ट्रीय एकात्मता को मजबूती देते रहे हैं। धर्माचार्य अब भी इन महापर्वों पर जुटते हैं, पर कोई सार्थक विचार-विमर्श अभी नहीं हो रहा है।

समय की माँग है कि युगीन परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्र की सांस्कृतिक, सामाजिक चेतना का विकास और अनुरक्षण हो। महाकुंभ का भी यही संदेश है। ❐

# महाकुंभ में सेवा कार्यों की होड़

■ हरि मंगल

पौष पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर महाशिवरात्रि तक चलने वाले प्रयागराज महाकुंभ में देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं और धर्माचार्यों का आंकड़ा सारे पूर्वानुमानों को ध्वस्त कर रहा है। 4 हजार हेक्टेयर में फैले धर्म क्षेत्र में धार्मिक गतिविधियों के साथ-साथ सेवा कार्यों की गूंज देश-विदेश तक सुनाई पड़ रही है, क्योंकि यहां आने वाले श्रद्धालुओं के लिये संतों के साथ-साथ अनेक सामाजिक और धार्मिक संस्थाएं और सनातनधर्मी विविध प्रकार के सेवा प्रकल्प चला रहे हैं। धर्म नगरी होने के कारण अन्न क्षेत्र के साथ ही चिकित्सा सेवा, दिव्यांगजनों के कृत्रिम अंग और दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं निःशुल्क उपलब्ध हो रही हैं।

**महाकुंभ में झंडेवाला देवी मन्दिर, दिल्ली की ओर से चल रहे सेवा केंद्र पर सुबह से शाम तक श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है, क्योंकि वहां भोजन के बजाय भक्तों को चाय पिलाई जाती है। चाय का वितरण 10 जनवरी को शुरू हुआ है और यह सेवा 14 फरवरी तक चलती रहेगी।**

परम्परागत सेवा कार्यों की बात की जाए तो इस बार देश के प्रमुख उद्योगपति गौतम अडानी धर्म, कर्म और सेवा कार्यों में इस्कॉन के माध्यम से बड़ा कार्य कर रहे हैं। अडानी द्वारा इस्कॉन के माध्यम से महाकुंभ में आए श्रद्धालुओं को भोजन कराया जा रहा है। यह भोजन इस्कॉन के दो रसोई घरों में बन रहा है और प्रतिदिन लगभग 35-40 हजार लोगों को भोजन कराया जा रहा है। मुख्य स्नान पर्व पर यह आंकड़ा बढ़ जाता है। भोजन प्रसाद के वितरण का समय सुबह 9 बजे से रात्रि 9 बजे तक निर्धारित है। भोजन में चावल, दाल, पूड़ी, पकौड़े, आलू मटर, काले चने की सब्जी के साथ मिठाई में हलुवा, मालपुआ, बूंदी आदि वितरित होता है। धार्मिक सेवा कार्य के क्षेत्र में जहां एक ओर अडानी के प्रचार वाहन से श्रद्धालुओं को गीता प्रेस से प्रकाशित आरती संग्रह निःशुल्क दिया जा रहा है, वहीं इस्कॉन के माध्यम से श्रीमद्भगवद्गीता की पुस्तिका भी मुफ्त में दी जा रही है। यद्यपि इस्कॉन के कार्यकर्ता गीता के मुफ्त वितरण के दुरुपयोग को रोकने के उद्देश्य से साथ में अपनी 20 रुपये की पुस्तक अनिवार्य रूप से दे रहे हैं। अडानी की ओर से इस्कॉन को 50 गोल्फ कार्ट गाड़ी दी गई है, जिनमें अशक्त, दिव्यांग और बीमार लोगों को इस्कॉन के शिविर से संगम स्नान के लिए ले जाया जाता है। मुख्य रूप से यह व्यवस्था इस्कॉन के लिए है, लेकिन यदि रास्ते में इस प्रकार का कोई श्रद्धालु मिल गया तो उसे भी साथ में ले जाया जाता है।

झंडेवाला माता मंदिर द्वारा महाकुंभ में लगाया गया चाय का एक शिविर

अन्न क्षेत्र में सामाजिक संस्था 'ओम नमः शिवाय' का नाम भी महाकुंभ में खूब चर्चा में है, क्योंकि पिछले कई कुंभ, महाकुंभ से यह संस्था अन्न क्षेत्र चला रही है। अनुमानतः 30 से 35 हजार लोगों को प्रतिदिन भोजन प्रसाद का वितरण किया जा रहा है। सफेद वस्त्र में लाल पगड़ी पहने स्वयंसेवक बहुत विनम्र भाव से श्रद्धालुओं को भोजन प्रसाद ग्रहण करने के लिए बुलाते हैं। संस्था की व्यवस्था से जुड़े बसंत विक्रम सिंह बताते हैं, 'मेले में चार केन्द्र चल

रहे हैं, जो देर रात तक भोजन वितरण करते हैं। प्रातः चाय के बाद भोजन प्रसाद वितरण प्रारम्भ होता है। दिन के भोजन में कढ़ी, चावल अथवा छोला, पूड़ी चावल, रोटी, खीर तथा शाम को सब्जी के साथ रोटी-चावल दिया जाता है। उन्होंने बताया कि 15 दिसम्बर, 2024 से प्रारम्भ हुआ अन्न क्षेत्र 26 फरवरी, 2025 तक चलता रहेगा।

महाकुंभ में झंडेवाला देवी मन्दिर, दिल्ली की ओर से चल रहे सेवा केंद्र पर सुबह से शाम तक श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है, क्योंकि वहां भोजन के बजाय भक्तों को चाय पिलाई जाती है। चाय का वितरण 10 जनवरी को शुरू हुआ है और यह सेवा 14 फरवरी तक चलती रहेगी। मेले में कुल आठ प्रमुख स्थानों, जिनमें नेत्र कुंभ में तीन स्टॉल, विहिप के शिविर और किन्नर अखाड़े का एक स्टॉल शामिल है, पर चाय और साथ में ब्रिटानिया या मैरी के दो रस्क वितरित किए जा रहे हैं। चाय पीने वालों के लिए कोई सीमा निर्धारित नहीं है। वे चाहे जितनी बार चाय पियें लेकिन एक बार में एक ही चाय दी जाती है। व्यवस्थापक मदन मोहन के

*उद्योगपति गौतम अडानी की सहायता से इस्कॉन द्वारा भोजन सेवा*

अनुसार, 'चाय वितरण के लिए 60 लोगों की टीम है जिसमें 25 सेवादार और 35 कर्मचारी शामिल हैं। चाय वितरण का समय सुबह 5 बजे से रात्रि 11 बजे का निर्धारित किया गया है, लेकिन मुख्य अवसरों पर श्रद्धालुओं के साथ पुलिस प्रशासन के लोगों के लिए देर रात तक सेवा चलती रहती है। चाय बनाने में प्रतिदिन 2500 लीटर दूध का उपयोग हो रहा है। 'ब्रिटानियां' और 'मैरी' कंपनी द्वारा रस्क और 'सुगंध' कंपनी की ओर से चाय उपलब्ध कराई गई है।

*कार्ष्णि ऋषि के शिविर में भोजन प्राप्त करने के लिए खड़े भक्त*

**उद्योगपति गौतम अडानी द्वारा इस्कॉन के माध्यम से महाकुंभ में आए श्रद्धालुओं को भोजन कराया जा रहा है। यह भोजन इस्कॉन के दो रसोई घरों में बन रहा है और प्रतिदिन लगभग 35-40 हजार लोगों को भोजन कराया जा रहा है। मुख्य स्नान पर्व पर यह आंकड़ा बढ़ जाता है। भोजन प्रसाद के वितरण का समय सुबह 9 बजे से रात्रि 9 बजे तक निर्धारित है।**

'अक्षयपात्र' संस्था की ओर से भी बड़े पैमाने पर भोजन वितरण किया जा रहा है। संस्था के शिविर में प्रतिदिन

*नेत्र कुंभ में नेत्र चिकित्सा करते चिकित्सक*

**सामाजिक संस्था 'सक्षम' द्वारा महाकुंभ में आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं के नेत्र परीक्षण, चश्मा और ऑपरेशन की मुफ्त व्यवस्था नेत्र कुंभ में की गई है। लगभग 10 हेक्टेयर परिधि में फैले नेत्र कुंभ में कुल 10 ओपीडी हैं। प्रतिदिन 3 हजार से अधिक मरीजों का परीक्षण किया जा रहा है।**

श्रद्धालुओं को बैठा कर भोजन प्रसाद खिलाया जाता है। सुबह 10 बजे और शाम 6 बजे के बाद प्रसाद वितरण होता है। जो लोग बैठ कर न खाना चाहें उनके लिए शिविर के बाहर वेन में प्रसाद रख कर वितरण करने की व्यवस्था की गई है। संस्था में भोजन प्रसाद की व्यवस्था देखने वाले उमा शंकर उपाध्याय ने बताया, 'प्रतिदिन लगभग सात हजार श्रद्धालुओं को भोजन कराया जा रहा है। प्रयास यही रहता है कि कोई भी श्रद्धालु भूखा न रहे।'

कार्ष्णि ऋषि के शिविर में प्रतिदिन भारी भीड़ है। यहां सुबह तीन हजार लोगों को नास्ते में इडली, सांभर और वडा दिया जाता है। नाश्ता खत्म हो जाने के बाद श्रद्धालुओं को खिचड़ी बांटी जाती है। यहां सुबह 9 बजे के बाद भोजन का वितरण प्रारम्भ हो जाता है। यहां प्रतिदिन खाने में दाल, चावल, रोटी सब्जी तथा मिष्ठान दिया जाता है। रात्रि के खाने में मिठाई नहीं है।' कार्यकर्ताओं ने बताया कि यहां भोजन प्रसाद पाने वालों में श्रद्धालुओं से ज्यादा विद्यार्थी और मजदूर हैं, जो समीप के हास्टलों, लाज और मेला क्षेत्र में रहते हैं। यहां प्रतिदिन एक प्रकार का ही भोजन दिया जाता है। प्रतिदिन लगभग 8 से 10 हजार लोग यहां भोजन कर रहे हैं। कार्ष्णि ऋषि के शिविर में अन्न क्षेत्र 12 जनवरी से चल रहा है और कब तक चलेगा यह अभी तय नहीं है।

सेवा कार्यों में सबसे अनूठा प्रयोग है नेत्र कुंभ। महाकुंभ में आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं के नेत्र परीक्षण, चश्मा और ऑपरेशन की मुफ्त व्यवस्था नेत्र

*दंत कुंभ में चिकित्सा कराता एक भक्त*

कुंभ में है। देश में नेत्रहीनों के लिए व्यापक पैमाने पर कार्य करने वाली संस्था 'सक्षम' द्वारा महाकुंभ में नेत्र रोगी श्रद्धालुओं के लिए बड़े चिकित्सा शिविर की परिकल्पना की गई। लगभग 10 हेक्टेयर परिधि में फैले नेत्र कुंभ में कुल 10 ओपीडी हैं। प्रतिदिन 3 हजार से अधिक मरीजों का परीक्षण किया जा रहा है। यहां आने वाले मरीजों का औसत प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। नेत्र कुंभ 12 जनवरी से प्रारम्भ हुआ है और 26 फरवरी तक चलेगा। आयोजकों की ओर से 5 लाख मरीजों के नेत्र परीक्षण, उनकी दवायें तथा आवश्यकता के अनुरूप उनको चश्मा देने की व्यवस्था की गई है। संस्था ने यहां आने वाले मरीजों के लिये 3 लाख चश्मा वितरण का लक्ष्य रखा है। महाकुंभ में आए सभी श्रद्धालुओं के लिए यह सब निःशुल्क है। संस्था की ओर से 50 हजार श्रद्धालुओं की आंखों के ऑपरेशन की निःशुल्क व्यवस्था मरीज के घर के पास के प्रतिष्ठित अस्पतालों में की गई है। ऑपरेशन की आवश्यकता वाले मरीजों को एक कार्ड बना कर दिया जा रहा है। श्रद्धालु एक वर्ष के अंदर जब चाहें संस्था द्वारा निर्धारित अस्पताल में जाकर अपना ऑपरेशन करा सकता है। देश भर के डाक्टर और प्रमुख अस्पताल इस सेवा कार्य में सहयोग के लिए आगे आ रहे हैं। नेत्र कुंभ आयोजन समिति के अध्यक्ष और पूर्व आईपीएस अधिकारी कविन्द्र प्रताप सिंह बताते हैं, 'इतना बड़ा सेवा कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के

*नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के शिविर में कृत्रिम अंग दिखाते एक कार्यकर्ता*

**अधिकारिता मंत्रालय की ओर से महाकुंभ में लगाए गए शिविर में वरिष्ठ नागरिकों को राष्ट्रीय वयोश्री योजना के अन्तर्गत कमर बेल्ट, घुटने का पट्टा, स्टिक, वाकिंग सिस्टम, कमोड वाली व्हील चेयर, सर्वाइकल कालर और कान की मशीन जैसे उपकरण मुफ्त दिए जा रहे हैं।**

सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल जी की प्रेरणा और मार्गदर्शन तथा सक्षम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री चन्द्रशेखर की देखरेख में हो रहा है। संस्था की ओर से नेत्रदान को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।'

विहिप के सेवा विभाग के 'योगक्षेम सेवा न्यास' द्वारा महाकुंभ में नेत्र कुंभ की तर्ज पर दंत कुंभ चलाया जा रहा है। विहिप काशी प्रांत के सेवा प्रमुख अनिल जी बताते हैं, 'आज प्रत्येक परिवार में कोई एक व्यक्ति दंत रोग से अवश्य पीड़ित है। इसी परिकल्पना को लेकर लोगों को इलाज के साथ जागरूक करने के उद्देश्य से यह सेवा कार्य प्रारम्भ किया गया है। 10 जनवरी से प्रारम्भ हुआ दंत कुंभ 26 फरवरी तक चलेगा।' वहां सेवा दे रहे डॉ. अखिलेश त्रिपाठी बताते हैं, 'ओपीडी प्रातः 9 से बजे अपराह्न 2 बजे तक निर्धारित है। हम मरीजों के दांतों का परीक्षण, प्राथमिक उपचार, पेस्ट, माउथवास, दवा आदि निःशुल्क उपलब्ध करा रहे हैं। हमारे पास 5 चेयर हैं, जिसके लिए 10 डॉक्टर और सहायक उपलब्ध रहते हैं। प्रतिदिन लगभग 4 से 5 सौ मरीज आ रहे हैं।' वरिष्ठ दंत चिकित्सक डॉक्टर एस. पी. सिंह ने बताया, 'यहां पर एक्स-रे आदि की सुविधा नहीं है। इसके लिए हम मरीज को उसके शहर के ऐसे संस्थान अथवा डॉक्टर के पास भेजते हैं, जिन्होंने संस्था के साथ सहयोग का आश्वासन दिया है। मरीज को वहां पर न्यूनतम खर्च पर इलाज की सुविधा है।' इस कार्य में नेशनल मेडिकोज आर्गनाइजेशन, डेंटल सर्जन एसोसिएशन

तथा यूनाइटेड मेडीसिटी प्रयागराज द्वारा सहयोग किया जा रहा है।

महाकुंभ में चल रहे चिकित्सा संबंधी अनेक सेवा कार्यों में 'नारायण खालसा' भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान की ओर संचालित सेवा प्रकल्प द्वारा महाकुंभ में तमाम प्रकार के कार्य किए जा रहे हैं, लेकिन उनमें मुख्य है समाज के दिव्यांग बंधु-बहनों को मुख्यधारा में लाने के लिए नि:शुल्क कृत्रिम अंग व कैलीपर्स का वितरण। यहां की व्यवस्था देख रहे आदित्य चौबीसा ने बताया, 'महाकुंभ में 14 जनवरी से 26 फरवरी तक शिविर चलेगा। इस अवधि में संस्थान की ओर से दिव्यांगों को जर्मन तकनीक से बने हुए कृत्रिम अंग और कैलीपर्स की सेवाएं दी जा रही हैं। यदि कोई दिव्यांग मोबाइल, कम्प्यूटर अथवा सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त करने का इच्छुक होगा तो उसे संस्था के उदयपुर मुख्यालय भेजा जाएगा।' चौबीसा ने यह भी बताया कि शिविर में प्रतिदिन नि:शुल्क फिजियोथेरिपी का केन्द्र चल रहा है, जिसका लोग लाभ उठा रहे हैं। उन्होंने बताया कि प्रयाग में जिन दिव्यांगजनों ने कृत्रिम अंग के लिए सम्पर्क किया है या कर रहे हैं, उनका माप लेकर कृत्रिम अंग बनाए जा रहे हैं। कार्यकर्ता विष्णु रावत ने बताया कि शिविर से जरूरतमंदों को व्हील चेयर और ट्राई सायकिल का मुफ्त वितरण किया जा रहा है। उ.प्र. के संबंध में बताया कि प्रदेश के लगभग ग्यारह हजार दिव्यांगजनों को संस्थान की ओर से कृत्रिम हाथ, पैर दिए जा चुके हैं। उन सभी परिवारों को महाकुंभ में स्नान के लिए बुलाया गया है। संस्थान की ओर से असहाय और गरीबों को कंबल का भी वितरण किया जा रहा है।

**विहिप के सेवा विभाग के 'योगक्षेम सेवा न्यास' द्वारा महाकुंभ में नेत्र कुंभ की तर्ज पर दंत कुंभ चलाया जा रहा है। 10 जनवरी से प्रारम्भ हुआ दंत कुंभ 26 फरवरी तक चलेगा। यहां मरीजों को सभी सुविधाएं नि:शुल्क मिल रही हैं।**

महाकुंभ में सेवा कार्य में स्वयंसेवी और धार्मिक संस्थाएं ही नहीं, सरकारी विभाग भी शामिल हो गए हैं। सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की ओर से महाकुंभ में लगाए गए शिविर से वरिष्ठ नागरिको को ऐसे उपकरण दिए जा रहे हैं, जिनकी उनको दैनिक जीवन में अति आवश्यकता है। मंत्रालय की ओर से बुजुर्ग श्रद्धालुओं को राष्ट्रीय वयोश्री योजना के अन्तर्गत कमर बेल्ट, घुटने का पट्टा, स्टिक, वाकिंग सिस्टम, कमोड वाली व्हील चेयर, सर्वाइकल कालर और कान की मशीन जैसे उपकरण मुफ्त दिए जा रहे हैं। बताया गया कि इस योजना का लाभ दिलाने के लिए 13 जनवरी से शिविर लगाया गया है, जो 26 फरवरी तक चलेगा। मंत्रालय के अधीन आने वाले अधिकारिता विभाग ने भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम को यह उपकरण बनाने का दायित्व सौपा है। इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिये बुजुर्ग की आयु 60 वर्ष से अधिक और प्रतिमाह 15 हजार से कम आय होनी चाहिए। यहां आने वाले बुजुर्गों का पहले अर्जुन पोर्टल पर पंजीकरण किया जाता है। पंजीकरण हो जाने के बाद मशीन द्वारा उस व्यक्ति का परीक्षण किया जाता है। परीक्षण के बाद तय होता है कि संबंधित व्यक्ति को किन-किन उपकरणों की आवश्यकता है उसी के अनुरूप उपकरण प्रदान किए जाते है। सबसे उल्लेखनीय तथ्य यह है कि जितने उपकरणों की आवश्यकता पाई जाती है वे सभी उपकरण प्रदान किए जाते हैं। मंत्रालय की ओर से 10 लोग पंजीयन और 20 लोग उपकरण वितरण हेतु लगाए गए हैं। बताया गया कि बड़ी संख्या में लोग इस योजना का लाभ ले रहे हैं। सम्भावना है कि 26 फरवरी तक लाभार्थियों की संख्या दस हजार तक पहुंच जाएगी।

**अन्न क्षेत्र में सामाजिक संस्था 'ओम नम: शिवाय' का नाम भी महाकुंभ में खूब चर्चा में है, क्योंकि पिछले कई कुंभ, महाकुंभ से यह संस्था अन्न क्षेत्र चला रही है। अनुमानत: 30 से 35 हजार लोगों को प्रतिदिन भोजन प्रसाद का वितरण किया जा रहा है।**

इन सेवा कार्यों को देखकर यही कहा जा सकता है कि जो भी सेवा में लगे हैं, वे सनातन के इस संगम में भारत की सदियों पुरानी सेवा की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। ❐

# जहाँ शिव, वहाँ आनन्द

■ इन्दिरा मोहन

जैसे आकाश में मेघमाला, सरोवर में तरंग, सूर्य में तेज वैसे ही शिव जगत के कण-कण में व्याप्त हैं। हम सब उनकी उपासना करते हैं, पुष्प, बेलपत्र तथा नैवेद्य चढ़ाते हैं, किन्तु क्या शिवत्व को जीवन में उतारते हैं? क्या उन सिद्धांतों पर चलते हैं जिसके शिव प्रवर्तक हैं।

शिव जी का सारा जीवन बुराइयों का नाश और भलाई की स्थापना के लिये है। उन्होंने विश्व ही नहीं, देवताओं के कल्याण के लिये कंठ में विष धारण किया और नीलकंठ कहलाए। दानवों का दमन कर शिवत्व की स्थापना की। शिव समन्वय, सहिष्णुता, प्रेम शान्ति और कल्याण के आधार हैं तभी वे पुराणों में सारे विरोधी भावों का सामंजस्य करने वाले देव के रूप में चित्रित किए गए हैं। शिव अर्धनारीश्वर होकर भी काम विजेता, गृहस्थ होते हुए भी गृहस्थी के प्रपंचों से दूर, भोग सुविधाओं से परे तपस्वी समाधि स्थ। भयंकर सांप और सौम्य चन्द्रमा दोनों उनके शरीर की शोभा हैं। मस्तक में प्रलय कालीन अग्नि, सिर पर हिम शीतल गंगा का श्रृंगार। सहज बैर भुला कर साथ-साथ क्रीड़ा करते वृषभ, सिंह, मोर और सांप। न्याय एवं प्रेम शासन का कितना आदर्श रूप भगवान शंकर प्रस्तुत करते हैं। शिव प्रेम स्वरूप हैं, कल्याण स्वरूप हैं, इसलिए इन विरोधों को हंसते-हंसते सहन करते हैं।

जीवन की पूर्णता बंटने में नहीं, बिखरने में नहीं, एक होने में है। जगत में द्वन्द्व तो रहेगा ही सुख-दुख, पाप-पुण्य, जीवन-मरण, धूप-छाया की भांति सदैव साथ-साथ रहते हैं। अत: अपने में शिवत्व जागृत कर संसार के विष को पीना होगा। हमें केवल अपने लिए नहीं, दूसरों की भलाई के बारे में सोचना है। प्राणीमात्र को एक सूत्र में बांधने वाली शक्ति प्रेम है, प्रेम का आधार शिवत्व ही है। शिवत्व अर्थात् कल्याण के उच्चतर स्तर पर उठना जहां दूसरा कोई शेष न रहे। सबमें वही एक चेतन तत्व विराजमान है फिर भेदभाव कैसा। यह सत्य ही शिवत्व है। हम सबके हृदय में शान्त, स्थिर और अचल रूप से रमने वाला एक ही शिव तत्व विष्णु रूप से धारण-पोषण करता है, रूद्र रूप से संहार करता है और ब्रह्म रूप से उत्पन्न करता है।

यूं तो शिव सदा सौम्य हैं किन्तु संसार के अनर्थों पर दृष्टि डालते ही भयंकर हो जाते हैं। सृष्टि क्रम ठीक-ठाक चले तो कल्याण अन्यथा रुलाने वाले रूद्र। वे अज्ञान के उन बंधनों का भी संहार करते हैं जो आत्मा को बांधे रखते हैं। वे संहार करते हैं कि अज्ञान नष्ट हो, मोह दूर हो, गर्व चूर हो, लोभ निर्मूल हो, आसुरी भाव एवं रूप जल कर शुद्ध हो। उनकी भीषण निर्दयता में उनके हृदय की करुणा छिपी है, दया छिपी है। वे तो केवल मनुष्य ही नहीं, प्राणीमात्र का कल्याण चाहते हैं।

**वास्तव में शिव हमारे जीवन की ऊर्जा हैं, चेतना हैं। तेज, बल, ज्ञान और बलिदान का आधार हैं, जिसके निकलते ही शरीर शव हो जाता है और जला कर पंच भूतों में मिला दिया जाता है। जब तक हम अपने स्थूल शरीर, चंचल मन और अस्थिर बुद्धि को महत्व देते रहेंगे, हमारी वास्तविक शक्ति सीमित व कुंठित होती जाएगी।**

वास्तव में शिव हमारे जीवन की ऊर्जा हैं, चेतना हैं। तेज, बल, ज्ञान और बलिदान का आधार हैं, जिसके निकलते ही शरीर शव हो जाता है और जला कर पंच भूतों में मिला दिया जाता है। जब तक हम अपने स्थूल शरीर, चंचल मन और अस्थिर बुद्धि को महत्व देते रहेंगे, हमारी वास्तविक शक्ति सीमित व कुंठित होती जाएगी। इसके विपरीत शिव का स्पर्श जितना प्रगाढ़ होगा उतना ही हमारा व्यक्तित्व सात्विक बुद्धि से युक्त व्यवहार में कुशल एवं मंगलमय विचारों से परिपूर्ण हो सकेगा। तब हम अपने मार्ग के साथ-साथ दूसरों का पथ भी आत्मज्ञान से आलोकित कर सकेंगे।

शिव तत्व तो गंगा है जितनी बार उनके नाम-स्मरण, स्वरूप चिन्तन में डुबकी लगाइये, ज्ञान-भक्ति-उपासना से भरी अंजुरी छलक-छलक कर आस-पास आनन्द बिखेरती जाएगी। ये आनन्द वस्तुओं के जोड़ने का आनन्द नहीं, सुविधा का आनन्द नहीं, सत्ता के संचय का भी आनन्द नहीं वरन् सबसे जुड़ने का, सबसे एक होने का सहजन आनन्द है, जहां प्रशांति ही प्रशांति है, पवित्रता ही पवित्रता है, प्रेम ही प्रेम है। ❐

# नागरिक कर्तव्य एवं शिष्टाचार

■ मानवेन्द्र

यद्यपि वर्ष 1950 में स्वीकृत हमारे संविधान में कर्तव्यों के विषय में कोई अधिक चर्चा नहीं हुई। किंतु 1976 में जिस समय देश पर आपातकाल लागू था, तत्कालीन कांग्रेस सरकार में कैबिनेट मंत्री सरदार स्वर्ण सिंह के नेतृत्व में एक कमेटी का गठन किया, जिसकी सिफारिश को आधार बनाकर 10 कर्तव्यों वाला 42वां संविधान संशोधन किया गया। बाद में 2002 में एक और संशोधन द्वारा 11 वां कर्तव्य भी जोड़ा गया।

यद्यपि कर्तव्यों की पालना कराने की कोई बाध्यता नहीं है, और उन्हें न करने पर किसी प्रकार के दंड का प्रावधान भी नहीं है, किंतु यह अतिआवश्यक है कि सभी नागरिक कुछ आधारभूत कर्तव्यों का पालन अवश्य करें। नागरिक अधिकार और नागरिक कर्तव्य, ये दोनों ऐसे हैं जैसे मनुष्य के दो पैर। दोनों बराबर चलेंगे तभी मनुष्य आगे चल पाएगा। इसी प्रकार अपना देश, समाज भी आगे तभी बढ़ पाएगा जब हम अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी पूरी तरह ध्यान रखेंगे। इस समय पर संविधान व कानून द्वारा हमारे नागरिक अधिकारों की रक्षा की जाती है और देश भर में बड़ी संख्या में व्यक्ति, संगठन व समाज समूह बने हुए हैं जो विभिन्न प्रकार से अपने अधिकारों के लिए जागरूक रहते हैं, उनका प्रचार-प्रसार करते हैं, यहां तक कि संघर्ष भी करते हैं और अधिकारों की प्राप्ति के लिए सब प्रकार के संवैधानिक प्रक्रिया का उपयोग भी करते हैं। दुखद यह भी है कि अधिकारों की प्राप्ति के लिए वह अनेक बार अनाधिकार चेष्टा व कार्यों को करने में भी कई बार संकोच नहीं करते।

किसी भी समाज के फलने-फूलने की अनिवार्य शर्त है कि वहां के लोग अपने नागरिक कर्तव्यों का न केवल ध्यान रखें, बल्कि उनका समुचित पालन भी करें। भारत में 6 जनवरी को 'मूलभूत कर्तव्य दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

नागरिक कर्तव्यों की पूर्ति के लिए जन संगठनों, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक संगठनों, प्रवचन कर्ताओं तथा वक्ताओं को आगे आना चाहिए। क्योंकि संविधान में लिखित मार्गदर्शक / नीति निर्देशक सिद्धांत की तरह नागरिक कर्तव्य भी स्वाभाविक रूप से अदालत के विचारण के योग्य नहीं है।

किसी भी समाज के फलने-फूलने की अनिवार्य शर्त है कि वहां के लोग अपने नागरिक कर्तव्यों का न केवल ध्यान रखें, बल्कि उनका समुचित पालन भी करें। भारत में 6 जनवरी को 'मूलभूत कर्तव्य दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

**मौलिक आधारभूत कर्तव्यों की सूची**

1. संविधान का पालन करना और उसके आदर्श और संस्थानों, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गीत का सम्मान करना।
2. स्वतंत्रता संघर्ष के लिए प्रेरित, स्वतंत्रता संघर्ष के उद्दात विचारों को आदर्श मानना और उनका पालन करना।
3. भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता का समर्थन करना, उसे सुरक्षित करना।
4. देश की रक्षा करना और आवश्यकता पड़ने पर राष्ट्रीय सेवा प्रदान करना।
5. भारत के सभी लोगों के बीच सांप्रदायिक भाषण और क्षेत्रीय या विभागीय विविधता को पार करके सामान्य भाईचारे और सद्भाव की भावना को बढ़ावा देना और महिलाओं की मर्यादा के खिलाफ अपमानजनक आचरण का त्याग करना।
6. भारत देश की संयुक्त धरोहर को सम्मान देना और संरक्षित करना।
7. प्राकृतिक पर्यावरण को सुरक्षित रखना और उसे सुधारना। जैसे कि वन, झील, नदियां और वन्य जीवन का पर्याप्त ध्यान रखना और जीवित प्राणियों के प्रति दया करुणा रखना।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद तथा जिज्ञासा एवं सुधार की भावना का विकास करना।
9. सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा संरक्षा करना और हिंसा का त्याग करना।
10. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता की दिशा में प्रयास करना, ताकि राष्ट्र लगातार प्रयास और उपलब्धि के उच्च स्तर पर पहुंच सके।

11. 6 वर्ष से 14 वर्ष तक के अपने बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान करना।

(यह 86 वां संवैधानिक संशोधन अधिनियम 2002 में जोड़ा गया।)

विभिन्न सरकारों ने समाज में कर्तव्यबोध जागरण के लिए कुछ संस्थाओं का भी निर्माण किया है। जैसे- एनएसएस, नेशनल स्काउट एंड गाइड्स, एनसीसी, नेहरू युवा केंद्र आदि। इसी प्रकार देश में अनेक राष्ट्र हितचिंतक स्वयंसेवी संस्थाएं भी कार्यरत हैं, जो नागरिक कर्तव्य का बोध जागरण की दिशा में सक्रियता से कार्यरत हैं। हमें ऐसी संस्थाओं को पूरे मनोयोग से सहयोग करना चाहिए।

यद्यपि यह विषय सरकारों से अधिक सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं शैक्षिक संगठनों, व्यक्ति समूहों व व्यक्तियों का अधिक है। क्योंकि कर्तव्य की भावना मूल रूप से अनुगमन करने से प्रेरित रहती है। यह किसी दंड विधान द्वारा सुनिश्चित नहीं की जा सकती। इसलिए इसके लिए वास्तव में सामाजिक नेतृत्व को, नागरिक संगठनों को ही आगे आना चाहिए।

संविधान में दिए गए 11 कर्तव्यों की सूची के अतिरिक्त भी यहां पर सामान्य कर्तव्यों की एक सूची दी जा रही है, जिसका उपयोग आमजन को करना चाहिए और उसके अनुरूप अपने कर्तव्यों का निर्धारण और उनका पालन सुनिश्चित करना चाहिए।

एक श्रेष्ठ और उच्च प्रेरक समाज, और देश की रचना करने में प्रत्येक नागरिक को सहायक बनना चाहिए-

- जैसे भारत की सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाना। किसी भी देश में पुलिस अथवा सेना बिना नागरिकों के स्वयंस्फूर्त सहयोग भावना के परिणामकारी नहीं हो सकती। अत: देश के नागरिकों को अपनी व सुरक्षा के प्रति जागरूक होना, कोई भी संदिग्ध वस्तु मिलने पर वहां के पुलिस व प्रशासन को सूचित करना, सहयोग करने में संकोच नहीं करना चाहिए।
- किसी प्रकार की दुर्घटना, प्राकृतिक आपदा के समय पर भी सामान्य नागरिकों के कुछ कर्तव्य रहते हैं। उन्हें आगे बढ़कर पीड़ित व्यक्तियों व घटनास्थल पर अपना पूर्ण समय व शक्ति लगाने में संकोच नहीं करना चाहिए।
- फिर दिन प्रतिदिन, नागरिकों के नियम पालन का अभ्यास रहना चाहिए। शासन व्यवस्था और नियमों की अनुपालना करना- जैसे सड़क पर बाईं ओर चलना, लाल बत्ती पर रुकना, हेलमेट पहन कर दुपहिया वाहन चलाना, कार आदि में सीट बेल्ट लगाकर चलना, यथोचित पार्किंग करना, किसी भी प्रकार का अतिक्रमण नहीं करना, रिश्वत न देना न लेना, चोरी न करना आदि।

**शासन व्यवस्था और नियमों की अनुपालना करना- जैसे सड़क पर बाईं ओर चलना, लाल बत्ती पर रुकना, हेलमेट पहन कर दुपहिया वाहन चलाना, कार आदि में सीट बेल्ट लगाकर चलना, यथोचित पार्किंग करना, किसी भी प्रकार का अतिक्रमण नहीं करना, रिश्वत न देना न लेना, चोरी न करना आदि।**

- इसके अतिरिक्त भी सामान्य नागरिकों को राष्ट्रीय दिवसों जैसे स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, वीर बाल दिवस, महापरुषों की जन्म-जयन्ती तथा प्रेरक दिवस को अच्छे सार्वजनिक ढंग से मनाने में सक्रियता से सहभागी बनना चाहिए।
- देशभक्ति का जागरण, राष्ट्रीय उपलब्धियों का गुणगान यह भी प्रत्येक नागरिक का ही कर्तव्य है।
- इसके अतिरिक्त भी युद्धों और महामारियों के समय पर जैसे- कोरोना के समय पर नागरिकों को अपना विशिष्ट योगदान देना होता है, जिसके बदले में आर्थिक अपेक्षा नहीं करना।
- इसी प्रकार पर्यावरण का संरक्षण, ऊर्जा, जलवायु का संरक्षण यह संवैधानिक कर्तव्यों की सूची में भी है और हमें इसके प्रति सजग रहना व सहयोग करना ही चाहिए।
- अभी स्वच्छ भारत का विषय प्रधानमंत्री जी ने बड़ी तेजी से उठाया है। स्वाभाविक रूप से यह हमारा भी कर्तव्य है कि घर परिवार के अलावा सार्वजनिक स्थान, स्टेशन, बस स्टैंड, सड़क, धर्मशाला आदि भी साफ-स्वच्छ रहे। इसमें भी प्रत्येक नागरिक को जागरूक रहने व सहयोग करने की आवश्यकता है।
- स्थानीय व स्वदेशी उत्पादों की खरीद से देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती है। देश की पूंजी देश में ही रहती है।

- उद्यमिता व स्वरोजगार का प्रचार-प्रसार करने से देश की बेरोजगारी की समस्या दूर होती है। इस पर भी हमें ध्यान देना चाहिए।
- अपने विशिष्ट त्योहार, नवसंवत्सर, रक्षा-बंधन, गणेश चतुर्थी, विजया दशमी, दीपोत्सव, महाशिवरात्रि आदि प्रसंग पर सामूहिक व व्यक्तिगत स्तर पर पूर्ण योगदान इस विषय में करना चाहिए।
- इसके अलावा जो हम पर निर्भर हैं- वृद्ध, बाल, असहाय महिला व दिव्यांग आदि उन लोगों की सेवा करना, उन्हें अलग-अलग तरीके से सहयोग करना यह भी नागरिक कर्तव्य है।
- भारत एक लोकतांत्रिक देश है। इसलिए यहां मतदान करना, चुनावी प्रक्रिया में सक्रियता से सहभागी होना भी कर्तव्यों की श्रेणी में ही आता है।
- अपनी संस्कृति, अपनी धरोहरों, भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार करना नागरिक कर्तव्य है।
- विश्व में भारत की छवि उत्तम बनाने में अपना योगदान करना चाहिए और किसी भी ऐसी प्रक्रिया से बचना चाहिए जिससे बाहर के देशों में अपने देश की छवि धूमिल होती हो।
- किसी भी दंगा, अपराध व अन्य स्थिति में पुलिस और प्रशासन का खुलकर निर्भय होकर सहयोग करना चाहिए। हमारी सुरक्षा की गारंटी हमारे कर्तव्यों में भी निहित है।

**अभी स्वच्छ भारत का विषय प्रधानमंत्री जी ने बड़ी तेजी से उठाया है। स्वाभाविक रूप से यह हमारा भी कर्तव्य है कि घर परिवार के अलावा सार्वजनिक स्थान, स्टेशन, बस स्टैंड, सड़क, धर्मशाला आदि भी साफ-स्वच्छ रहे। इसमें भी प्रत्येक नागरिक को जागरूक रहने व सहयोग करने की आवश्यकता है।**

हमें यह भी सोचना-विचारना होगा कि कर्तव्यों की इन सूची को देश और समाज में पालन करने की पद्धति क्या हो?

इसमें सबसे बड़ी बात तो यह है कि आचरण ही प्रमुख विषय है। जब किसी समाज के मूर्धन्य लोग, प्रबुद्ध जन, अगुवा लोग इन नागरिक कर्तव्यों का सहज में पालन करते हैं, तो एक विशिष्ट अनुशासन का वातावरण बनता है। परिणामस्वरूप स्वाभाविक रूप से सामान्य जन व युवा भी वैसा करने लगते हैं।

'महाजनेन गत्ता: सा पंथा:' की युक्ति के अनुसार 'जैसा बड़े लोग करते हैं, वैसा ही सामान्य लोग करने लगते हैं।'

एक उदाहरण यहां है राजेंद्र प्रसाद बाबू प्रथम राष्ट्रपति का। जब वे शिक्षक थे तो उनके छात्रावास में जब भी बैंगन की सब्जी बनती थी, तो बच्चे वह सब्जी बहुत थोड़ी खाकर ज्यादातर जूठन में फेंक देते थे। जब राजेंद्र बाबू ने यह देखा तो उन्होंने इस जूठन में से एक कटोरी उठाई, और खाने की मेज पर रखकर स्वयं बैठकर खाने को तैयार हुए। तो सभी विद्यार्थी हाथ जोड़कर आ गए और कहने लगे, 'हमें क्षमा कीजिए आज के बाद कभी भी हम यह जूठन नहीं छोड़ेंगे।'

**देश के प्रति कर्तव्य का एक छोटा प्रेरक प्रसंग-**

स्वामी रामतीर्थ जब जापान गए तो एक दिन वे रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे थे। उन्हें फल खाने की इच्छा हुई। वह दो-तीन स्टेशनों पर उतरे, किंतु उनको वहां ताजा फल नहीं मिला। तब वह जाकर अपनी सीट पर बैठते हुए कहने लगे कि यह कैसा देश है, यहां पर तो ताजा फल भी नहीं मिलते?

इतना सुनकर उनके सामने बैठा युवक अगले ही स्टेशन पर चुपचाप उतरा और कहीं से ताजे फल लेकर आ गया। स्वामी जी प्रसन्न हुए और उसकी कीमत भी पूछी। तो उसने कहा कि बस आप अपने देश में जाकर मेरे देश की बुराई न करना, यही मेरे इन ताजे फलों का मूल्य है।

इस प्रकार की देशभक्ति की भावना, कर्तव्य की भावना की मेरे देश की छवि धूमिल ना हो, ही किसी भी देश को महान बनाने के लिए अनिवार्य तत्व रहता है। नागरिक कर्तव्यों के विषय में सब प्रकार के प्रचार-प्रसार माध्यमों द्वारा विद्यालयों, महाविद्यालयों व अन्य संस्थान जहां बाल व युवा हों- वहां कर्तव्य बोध के विषयों पर अलग-अलग प्रकार की चर्चाएं, भाषण, नाटक, प्रस्तुतियां की जानी चाहिए। जिससे सामान्य जन में अपने कर्तव्यों के प्रति एक भावना खड़ी हो सके। और उनका अनुगमन और अनुपालन करते हुए सभी नागरिक भारत को विश्व का सिरमौर बनाने में अपनी अपनी भूमिका निभा सकें।

नागरिक कर्तव्यों के पालन हेतु हर क्षेत्र में व्यापक प्रचार-प्रसार अहम् भूमिका निभा सकता है। ❐

*(लेखक सेवा भारती, यमुना विहार विभाग के संगठन मंत्री हैं)*

# ज्ञेय, ज्ञाता और ज्ञान

■ डॉ. पी. के. झा

जो भी जाना जा सकता है, वह ज्ञेय है। जो जानने की प्रक्रिया में संलग्न है, वह ज्ञाता है। और ज्ञेय और ज्ञाता के मिलन की प्रक्रिया ही ज्ञान है। यह तीनों तत्व एक जटिल लेकिन अद्‌भुत तंत्र का निर्माण करते हैं। परंतु, यहाँ एक गहरी सच्चाई छिपी हुई हैख़्ज्ञेय में त्रुटि हो सकती है क्योंकि जो जाना जा रहा है, वह सीमित है। ज्ञाता में भी त्रुटि हो सकती है क्योंकि वह अपनी धारणाओं, पूर्वाग्रहों और सीमाओं के साथ जानने का प्रयास कर रहा है। और ज्ञान की प्रक्रिया में भी त्रुटि हो सकती है क्योंकि यह दोनों की परस्पर क्रिया पर निर्भर करती है। लेकिन जब ज्ञेय स्वयं हो, और ज्ञाता भी स्वयं हो, तब ज्ञान की आवश्यकता समाप्त हो जाती है। यह मिलन स्वाभाविक और स्वतः हो जाता है। यह स्थिति ऐसी है जहाँ कोई अलगाव नहीं रहता। यहाँ त्रुटि की कोई संभावना नहीं रहती। व्यक्ति स्वयं में स्थित हो जाता है, और यही स्थिति स्व-स्थिति या स्वस्थता कहलाती है।

"मैं हूँ'' - यह एक सबसे बड़ा चमत्कार है।

**जीवन का आंतरिक चमत्कार**

मेरे होने का हर क्षण, हर सांस, और हर धड़कन यह दर्शाती है कि जीवन एक निरंतर चमत्कार है।

मेरा हृदय- जो बिना रुके, जीवन भर प्रतिदिन एक लाख बार धड़कता है। यह हर धड़कन में मुझे जीवन का अनुभव कराता है।

मेरे फेफड़े- जो प्रतिदिन 20,000 बार सांस लेते हैं और हर पल मेरे शरीर में प्राण ऊर्जा का प्रवाह बनाए रखते हैं।

मेरी किडनी- जो हर दिन 170 लीटर रक्त को फ़िल्टर करके साफ करती है, यह सुनिश्चित करती है कि मेरा शरीर विषाक्त पदार्थों से मुक्त रहे।

मेरी कोशिकाएँ- जो निरंतर नई होती रहती हैं। मेरा लीवर हर 6 हफ्ते में नया बन जाता है। यह शरीर में हर कोशिका जीवन को पुनः उत्पन्न करने की क्षमता रखती है।

पूरी सृष्टि मेरे जीवन के लिए समर्पित है। हर तत्व, हर ऊर्जा, और हर प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि मैं जीवित रहूँ, अपनी अनूठी प्रतिभा को दुनिया के साथ साझा करूँ, और इस सृष्टि को और समृद्ध करूँ।

**स्व में स्थित होना**

आज मैं स्व में स्थित होकर, अपने भीतर की अनंत ऊर्जा और प्रेम को अनुभव कर रहा हूँ। यह स्थिति किसी बाहरी प्रयास या ज्ञान की आवश्यकता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह मेरे स्वयं के साथ गहरे जुड़ाव का परिणाम है। यह समझ मुझे हर पल के लिए आभार से भर देती है। मैं आभारी हूँ इस अद्‌भुत जीवन के लिए। मैं आभारी हूँ कि मैं इस शरीर, इस मन और इस आत्मा के साथ इस सृष्टि का हिस्सा हूँ। आज, मैं न केवल स्वस्थ हूँ, बल्कि प्रेम, करुणा और आभार से परिपूर्ण हूँ। मेरे भीतर का प्रेम अब मेरे चारों ओर की हर चीज़ में फैल रहा है।

**आभार और प्रेम**

मैं इस सच्चाई के लिए आभार व्यक्त करता हूँ कि यह जीवन एक चमत्कार है। मैं इस प्रेम और आभार को अपने आसपास के हर व्यक्ति, हर प्राणी, और हर तत्व के साथ साझा करना चाहता हूँ। आज, मैं पूर्ण हूँ। मैं संपूर्ण हूँ। और मैं प्रेम से भरा हुआ हूँ। यह जीवन का चमत्कार है। यह मेरा स्व है। और यही मेरी स्वस्थता है। ❒

**सफलता की कहानियां मत पढ़ो,**
**उससे आपको केवल एक संदेश मिलेगा।**
**असफलता की कहानियां पढ़ो,**
**उससे आपको सफल होने के सुझाव मिलेंगे।**

**- ए.पी.जे. अब्दुल कलाम**

# सेवाभूमि दिल्ली: इंद्रप्रस्थ चिकित्सा सेवा यात्रा

■ प्रतिनिधि

दिल्ली देश की राजधानी है व राजनैतिक गढ़ भी है, इसी चलते देश की अनेकों नीतियाँ दिल्ली से ही तय होती हैं। सदियों से सत्ताप्रेमी दिल्ली के ऊपर निगाह लगाए बैठे हैं व इस शहर को परिवर्तन का केंद्र कहना ठीक ही होगा।एक ओर दिल्ली देश का दिल है तो दूसरी ओर एक बड़े शहर होने के नाते अनेकों सामाजिक बीमारियों से ग्रस्थ भी है।एक ओर गगनचुम्बी इमारतें हैं तो दूजी ओर अभावग्रस्त बस्तियों में रहने वाले लोग। समाज का एक बड़ा वर्ग ऐसी सेवा बस्तियों में रहता है जहाँ जीवन अत्याधिक कठिन है, ऐसे स्थान जहाँ न्यूनतम आवष्कताएँ भी पूरी नहीं हो पाती हैं। अमृतकाल का समय तो प्रारंभ हुआ है किंतु देश की राजधानी में ही सैकड़ों परिवार हैं जिन्हें जीवनयापन की मूलभूत सुविधा भी उपलब्ध हो पाना कठिन है।दिल्ली में सरकार की अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं किन्तु उसके अपितु सामाजिक क्षेत्र में कार्य कर रही गैर सरकारी संस्थाओं की संख्या अनगिनत है। दिल्ली जैसे शहर में अनेकों सेवा संस्थाओं का होना व उनके कार्यो को देख कर आबास होता है कि आवश्यकता कितनी अधिक है। अभावग्रस्त क्षेत्रों में रहने वाले जनसमुदाय को केवल आर्थिक सहयोग या नि:शुल्क सेवा की अपेक्षा नहीं होती अपितु समाज में वह समरसता के साथ रह सकें व सभी वर्ग में समानभाव हो और परस्पर प्रेम हो, ऐसी भी एक आशा रहती है। सामाजिक समरसता का भाव तभी उत्पन्न होता है जब हमें वंचित समाज की कठिनाइयों की अनुभूति होगी व समजीक समस्या निदान करने का मन बनेगा। समाज में समरसता, बीमारियों का उपचार हो व चिकित्सक समाज में अनुभूति के उपरांत सेवा भाव बढ़े, इसी विचार से प्रारंभ हुई इंद्रप्रस्थ चिकित्सा सेवा यात्रा। इस सेवा यात्रा में चिकित्सक समाज के सभी वर्ग चाहे वह बड़े अस्पतालों के नामी चिकित्सक हों या मेडिकल की पढ़ाई कर रहे विद्यार्थी, अपना समय लगते हैं व सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य सेवाऐं प्रदान करते हैं।

**सेवा बस्तियों की वर्तमान स्थिति**

दिल्ली में लगभग 1100 से अधिक सेवा बस्तियाँ हैं,

जहाँ लाखों लोग बेहद कठिन परिस्थितियों में अपना जीवन यापन कर रहे हैं। इन बस्तियों में रहने वाले लोगों को रोज़गार, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, व जल जैसी मूलभूत सुविधाओं की भारी कमी झेलनी पड़ती है। ऐसे स्थानों पर स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति बेहद दयनीय है। स्वास्थ्य सेवाओं की अनुपलब्धता के चलते सामान्य बीमारियाँ भी गंभीर रूप धारण कर लेती हैं। बच्चों में कुपोषण, महिलाओं में एनीमिया और वयस्कों में गैर-संचारी रोग (Non-communicable diseases) अत्यधिक प्रचलित हैं।

इसके अतिरिक्त, इन सेवा बस्तियों में जागरूकता का भी अभाव है। स्वच्छता व पोषण संबंधित जानकारी की कमी के चलते बीमारियों का प्रकोप अधिक रहता है। झुग्गी बस्तियों में दूषित पानी का सेवन और खराब सैनिटेशन के कारण जलजनित रोग, जैसे डायरिया और हैजा, आम बात हैं। इसके अलावा, मानसिक स्वास्थ्य भी एक प्रमुख समस्या के रूप में उभर रही है, क्योंकि यहाँ रहने वाले लोगों को तनाव और अनिश्चितता भरे जीवन का सामना करना पड़ता है और साथ ही नशीले पदार्थों का सेवन भी अधिक पाया जाता है।

**इंद्रप्रस्थ चिकित्सा सेवा यात्रा (ICSY) का उद्देश्य**

इन समस्याओं के समाधान के लिए सेवाभूमि दिल्ली में "इंद्रप्रस्थ चिकित्सा सेवा यात्रा" की शुरुआत नैशनल मेडिकॉज़ ऑर्गनाईज़ेशन (NMO) ने की है। यह एक व्यापक अभियान है जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य सुविधाओं को समाज के वंचित वर्ग तक पहुँचाना है। इस अभियान के अंतर्गत न केवल रोगियों का उपचार किया जाता है, बल्कि उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरूक भी किया जाता है।

इसका लक्ष्य है:

1. **स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता:** सेवा बस्तियों में चिकित्सा शिविर आयोजित करना, जहाँ निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण और दवाएँ वितरित की जाती हैं।
2. **स्वास्थ्य शिक्षा:** समुदाय के लोगों को स्वच्छता, पोषण और बीमारी की रोकथाम के लिए प्रशिक्षित करना।
3. **मानसिक स्वास्थ्य:** तनाव और मानसिक विकारों से निपटने के लिए काउंसलिंग और सहयोग प्रदान करना।
4. **स्थायी समाधान:** दीर्घकालिक स्वास्थ्य केंद्रों की स्थापना, ताकि लोगों को नियमित रूप से चिकित्सा सेवाएँ मिल सकें, इस विचार से भी कार्य करने की योजना नैशनल मेडिकॉज़ ऑर्गनाईज़ेशन (NMO) द्वारा बनाई जा रही है।

**इन्द्रप्रस्थ चिकित्सा सेवा यात्रा: मसर्रफ की कहानी, डॉ पुष्पा की जुबानी**

इन्द्रप्रस्थ चिकित्सा सेवा यात्रा (ICSY) के एक कैंप में उस दिन हलचल थी। सैकड़ों मरीज अपनी समस्याओं के समाधान के लिए कतार में खड़े थे। तभी एक महिला, लगभग 30 वर्ष की, हाथ में मोटी सी फाइल पकड़े हुए अंदर आई। उसका नाम मसर्रफ था। उसके चेहरे पर थकान और चिंता की लकीरें साफ झलक रही थीं। डॉक्टरों ने उससे पूछा, "क्या परेशानी है?" उसने बताया कि उसे अक्सर पेट दर्द और रक्त स्राव की समस्या होती है। उसकी आवाज में दर्द और लाचारी साफ झलक रही थी। जब उसकी फाइल देखी गई, तो पता चला कि वह पोस्ट-प्रेगनेंसी गेस्टेशनल ट्रोफोब्लास्टिक न्यूओप्लासिया (GTN) से जूझ रही थी।

कैंप में मौजूद डॉक्टरों ने तुरंत निर्णय लिया कि मसर्रफ को उनकी नियमित OPD में बुलाकर उसकी पूरी जांच की जाएगी। कुछ दिन बाद मसर्रफ अस्पताल आई, जहां उसकी जांचें नए सिरे से की गईं। परिणाम साफ थे- उसे तुरंत इलाज

की जरूरत थी।

इलाज शुरू हुआ। मसर्रफ को चार चक्रों में कीमोथेरेपी दी गई। हर चक्र के बाद उसकी स्थिति में सुधार होता गया। डॉक्टरों और उसकी दृढ़ इच्छाशक्ति ने उसे हर मुश्किल को सहने का हौसला दिया। नौ महीने बीत गए। मसर्रफ अब पूरी तरह ठीक थी। लेकिन खास बात यह थी कि वह अब भी अस्पताल की व्व्क में आती थी। मुस्कुराते हुए, बड़े हक से। "डॉक्टर साहब, मैं अब बिल्कुल ठीक हूं," वह कहती और अपने बच्चों के बारे में बताती। उसकी मुस्कान और आत्मविश्वास को देखकर डॉक्टरों का दिल भर आता।

मसर्रफ की कहानी, इन्द्रप्रस्थ चिकित्सा सेवा यात्रा की सार्थकता और महत्व को साबित करती है। यह यात्रा सिर्फ बीमारियों का इलाज भर नहीं करती, बल्कि उन जिंदगियों में उम्मीद और खुशी भी वापस लाती है, जो कभी खो चुकी होती हैं।

| यात्रा का अर्ध दशक | | | | |
|---|---|---|---|---|
| यात्रा | वर्ष | दिनांक | शिविर | लाभार्थी |
| ICSY 1 | 2019 | 30 जून | 14 | 1083 |
| कोरोना का सेवा काल - 2020 | | | | |
| ICSY 2 | 2021 | 17 जनवरी | 233 | 18601 |
| ICSY 3 | 2022 | 14 और 24 अप्रैल | 124 | >10000 |
| ICSY 4 | 2023 | 15 जनवरी | 115 | 8783 |
| ICSY 5 | 2024 | 28 जनवरी | 418 | >34000 |
| ICSY 6 | 2025 | 22 जनवरी | 503 | >42000 |

| ICSY | वर्ष | सेवादार | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | चिकित्सक | मेडिकल विद्यार्थी | नर्सिंग व अन्य स्वास्थ्यकर्मी | कुल |
| प्रथम | 2019 | 35 | 56 | 18 | 109 |
| द्वितीय | 2021 | 450+ | 550+ | 490+ | 1490+ |
| तृतीय | 2022 | 250+ | 400+ | 300+ | 950+ |
| चतुर्थ | 2023 | 200+ | 350+ | 250+ | 800+ |
| पंचम | 2024 | 500+ | 1000+ | 600+ | 2100+ |
| छठी | 2025 | 800+ | 1200+ | 1000+ | 3000+ |

**अभियान की प्रमुख गतिविधियाँ**

1. **स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन:** इंद्रप्रस्थ चिकित्सा सेवा यात्रा के तहत प्रत्येक वर्ष अधिकांश सेवा बस्तियों में एक ही दिन में स्वास्थ्य शिविर आयोजित किए जाते हैं। इन शिविरों में प्राथमिक चिकित्सा, बच्चों का टीकाकरण, महिलाओं की स्वास्थ्य जाँच और बुजुर्गों के लिए विशेष सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। हर शिविर में अनुभवी डॉक्टर, नर्स और पैरामेडिकल स्टाफ की टीम मौजूद रहती है।
2. **रोगों की रोकथाम पर फोकस:** अभियान के दौरान जलजनित, वायुजनित और गैर-संचारी रोगों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। जैसे डायबिटीज़, उच्च रक्तचाप, अनिमिया, नेत्र रोग और हृदय रोगों की जाँच के लिए स्पेशलिस्ट टीम का संचालन किया जाता है।
3. **स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम:** समुदाय के लोगों को स्वच्छता, पोषण और जीवनशैली संबंधी सुधार के लिए प्रेरित किया जाता है। बच्चों को साफ-सफाई के महत्व को समझाने के लिए विशेष कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं।

4. **मानसिक स्वास्थ्य पर बल:** तनाव और अवसाद जैसी समस्याओं से निपटने के लिए मनोवैज्ञानिक काउंसलिंग और ध्यान सत्र आयोजित किए जाते हैं।

**भागीदारी और सहयोग**

इंद्रप्रस्थ चिकित्सा सेवा यात्रा को सफल बनाने के लिए विभिन्न संगठनों और व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त हुआ है।

- **संगठनों का योगदान:** विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ, जैसे सेवा भारती और अन्य एनजीओ, इस अभियान में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।
- **स्वास्थ्य विशेषज्ञों का योगदान:** डॉक्टरों, नर्सों और स्वास्थ्य कर्मियों का सहयोग इस अभियान की रीढ़ है।
- **स्थानीय समुदाय का समर्थन:** सेवा बस्तियों के लोग इस अभियान का हिस्सा बनकर इसे सफल बना रहे हैं।

**भविष्य की योजनाएँ**

1. **चिकित्सा सेवाओं का विस्तार:** सेवा बस्तियों के साथ-साथ दिल्ली के अन्य वंचित क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य सेवाओं को पहुँचाना।
2. **स्थायी स्वास्थ्य केंद्र:** प्रत्येक प्रमुख सेवा बस्ती में एक स्थायी स्वास्थ्य केंद्र की स्थापना करना।

**निष्कर्ष**

इंद्रप्रस्थ चिकित्सा सेवा यात्रा न केवल सेवा बस्तियों के निवासियों के लिए वरदान साबित हो रही है, बल्कि यह समाज के हर व्यक्ति को यह सोचने पर मजबूर करती है कि स्वास्थ्य सेवाओं का अधिकार हर नागरिक का है। इस अभियान के माध्यम से एक नई ऊर्जा और उम्मीद का संचार हुआ है। यह केवल चिकित्सा सेवाएँ प्रदान करने का अभियान नहीं है, बल्कि यह मानवता की सच्ची सेवा का प्रतीक है।

सेवाभूमि दिल्ली में इस प्रयास को जितना सराहा जाए, उतना कम है। यह अभियान देश के अन्य हिस्सों के लिए भी एक उदाहरण प्रस्तुत करता है। यदि हम सब मिलकर इस प्रकार की पहल में योगदान दें, तो एक सशक्त, स्वस्थ और जागरूक समाज का निर्माण संभव है। ❐

# ज्ञानी कौन!

एक युवा ब्रह्मचारी देश-विदेश का भ्रमण कर वहां के ग्रंथों का अध्ययन कर जब अपने देश लौटा, तो सबके पास इस बात की शेखी बघारने लगा कि उसके समान अधिक ज्ञानी-विद्वान और कोई नहीं। उसके पास जो

भी व्यक्ति जाता, वह उससे प्रश्न किया करता कि क्या उसने उससे बढ़कर कोई विद्वान देखा है? बात भगवान बुद्ध के कानों में भी जा पहुंची। वे ब्राह्मण-वेश में उसके पास गए। ब्रह्मचारी ने उनसे प्रश्न किया, ''तुम कौन हो, ब्राह्मण?'' ''अपनी देह और मन पर जिसका पूर्ण अधिकार है, मैं ऐसा एक तुच्छ मनुष्य हूं।'' बुद्धदेव ने जवाब दिया।

''भलीभांति स्पष्ट करो, ब्राह्मण! मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आया।'' वह अहंकारी बोला। बुद्धदेव बोले, ''जिस तरह कुम्हार घड़े बनाता है, नाविक नौकाएं चलाता है, वादक वाद्य बजाता है और विद्वान वाद-विवाद में भाग लेता है,

उसी तरह ज्ञानी पुरुष स्वयं पर ही शासन करता है।'' ''ज्ञानी पुरुष भला स्वयं पर कैसे शासन करता है?'' ब्रह्मचारी ने पुन: प्रश्न किया। ''लोगों द्वारा स्तुति-सुमनों की वर्षा किए जाने पर अथवा निन्दा के अंगार बरसाने पर भी ज्ञानी पुरुष का मन शांत ही रहता है। उसका मन सदाचार, दया और विश्व-प्रेम पर ही केन्द्रित रहता है, अत: प्रशंसा या निन्दा का उस पर कोई भी असर नहीं पड़ता। यही वजह है कि उसके चित्तसागर में शांति की धारा बहती रहती है।''

उस ब्रह्मचारी ने जब स्वयं के बारे में सोचा, तो उसे आत्मग्लानि हुई और बुद्धदेव के चरणों में गिरकर बोला, ''स्वामी, अब तक मैं भूल में था। मैं स्वयं को ही ज्ञानी समझता था, किन्तु आज मैंने जाना कि मुझे आपसे बहुत कुछ सीखना है।''

''हां, ज्ञान का प्रथम पाठ आज ही तुम्हारी समझ में आया है, बंधु। और वह है नम्रता। तुम मेरे साथ आश्रम में चलो और इसके आगे के पाठों का अध्ययन वहीं करना।'' ❐

# अपने बच्चों को सुसंस्कारी बनाएं

■ दुर्गा शंकर त्रिवेदी

बच्चे ही राष्ट्र का भविष्य हैं। कल का भारत उनका अपना है। उन्हें कल का राष्ट्रनायक, समाज-सेवक और संस्कृति रक्षक बनाना है। अत: उन्हें सुसंस्कारी बनाना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है। आज इस राष्ट्रीय संपत्ति की सुरक्षा पर बहुत कम लोगों का ध्यान है। फलस्वरूप भरत और आरुणि जैसे बच्चों वाले देश में अनुशासनहीन, भिखमंगे, मादक द्रव्यसेवी और व्यभिचारी बालकों की संख्या बढ़ती जा रही है। पिता की आज्ञा पर 14 वर्ष वन की ठोकरें खाने वाले राम के ही वंशज आज अपने पिता को उपेक्षापूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं। आरुणि के समान गुरु-आज्ञा पालक की ही संतति आज आध्यापकों को चंद चांदी के टुकड़ों का टुक्कड़खोर समझती है। यह बच्चों की गलती नहीं, उनमें डाले गए संस्कारों की, उनके अभिभावकों की और आज के विषादमय परिस्थिति की ही त्रुटि है।

जब हमारे यहां भारतीय संस्कृति के जनक-यज्ञ की साक्षी में पोड्श संस्कार संयुक्त संस्कार पद्धति से बच्चों में दिव्य भवनामय संदेश प्रविष्टि किए जाते थे, तभी हमने राम, भरत, कृष्ण, आरुणि, भीष्म, अर्जुन, हनुमान जैसे नवरत्नों को प्राप्त किया। अत: आज पुन: संस्कारों के महत्व को समझने की आवश्कता है। चरित्रवान बच्चों की प्राप्ति के लिए यह अनिवार्य है कि माता-पिता स्वयं भी चरित्रवान, संयमी और भारतीय संसकृति के आदर्शों से युक्त आचरण वाले बनें, क्योंकि जो स्वयं अच्छे हैं, वही दूसरों

को भी अच्छे बन सकते हैं। बच्चे जैसा देखते हें, वैसा ही करते हैं। उन्हें व्याख्या नहीं, क्रियात्मक मूलक उपदेश चाहिए और यह स्वयं के सदाचरण से ही संभव हो सकता है। अत: यदि आप चाहते हैं कि आपके बालक सदाचारी, संयमी, समाज और राष्ट्र के सेवक बनें, तो अपने स्वयं के जीवन को आदर्शतम बनाएं। बालकों में आज पाश्चात्य सभ्यता

> **आप इस बात का भी ध्यान रखिए कि अपने बालक में केवल सद् प्रवृत्तियों को ही बढ़ने और विकसित होने दें। यदि आपने उसे अपनी निगाहों के सामने ही रखकर आचरणवान बनाया तो वह निश्चय ही समाज और धर्म-रक्षक बनेगा, नहीं तो जो स्थिति होगी, वह सामने है।**

निरंतर घर करती जा रही है। अत: यह अनिवार्य है कि उनमें समाज और धर्म के प्रति श्रद्धा और दर्द पैदा किए जाएं। इसके लिए यह आवश्यक है कि उन्हें दान की महत्ता समझाई जाए, अपनी आमदनी में से कुछ रकम आप स्वयं समाज, साहित्य एवं अन्य आदर्श कार्यों के लिए खर्च करते रहिए। अपने घर पर धर्म-घट रखिए। नित्य प्रति

भोजन करने से पूर्व जिस तरह आप साधुओं और भिखारियों को दान देते हैं, इस तरह इसे भी घर का महात्म्य मानते हुए भिक्षा दीजिए। क्योंकि यह आपके घर का अपना महात्म्य होगा। अत: उसे परिवार का हर सदस्य दान दे। उसमें किसी एक प्रकार का अनाज अथवा कुछ धनराशि स्वयं आप अपने बालकों से डलवाइये। इस प्रकार उनमें त्याग और दान की भावना जागृत होगी। बाद में आप उस रकम से स्वयं सत्साहित्य खरीदिए, सद्संस्थाओं को दान दीजिए अथवा किसी आदर्श कार्य में खर्च कर दीजिए।

आप इस बात का भी ध्यान रखिए कि अपने बालक में केवल सद् प्रवृत्तियों को ही बढ़ने और विकसित होने दें। यदि आपने उसे अपनी निगाहों के सामने ही रखकर आचरणवान बनाया तो वह निश्चय ही समाज और धर्म-रक्षक बनेगा, नहीं तो जो स्थिति होगी, वह सामने है। आप अपने बालकों को सुसंस्कारी बनाने का प्रयत्न करें तो यही आज समाज और धर्म के उत्थान का एक सरल और उपादेयतम मार्ग होगा। ❐

# स्वामी विवेकानंद और सेवा भारती

■ प्रतिनिधि

12 जनवरी, 1863 को कोलकाता में जन्मे स्वामी विवेकानंद जी केवल 39 वर्ष की आयु में इस नश्वर शरीर को छोड़ गए। इस छोटी-सी आयु में उन्होंने इतना बड़ा कार्य कर दिया कि आज भी उनके कार्यों का उदाहरण दिया जाता है। स्वामी जी का दृढ़ विचार था कि हमें अपने अभावग्रस्त परिवारों की सेवा करनी चाहिए। हमारे देश में कितने बेसहारा हैं, कितने दिव्यांग हैं, वंचित हैं जिनको दो समय का भोजन नहीं मिलता है। सभी अभावग्रस्त परिवारों की सेवा हमारा धर्म है, उत्तरदायित्व है। इसको दया-दान न समझा जाए। हमें सनातन धर्म के सिद्धांतों को याद रखना चाहिए, जिसमें कहा गया है कि यदि दायां हाथ देता है तो बाएं हाथ को पता नहीं लगना चाहिए।

इसी भावना के कारण सेवा भारती को समाज का सहयोग मिलता है और सेवा भारती स्वामी विवेकानंद जी के विचारों को अपनी थाती मानकर समाज के लिए कार्य कर रही है। आज सेवा भारती की छत्रछाया में हजारों लोग फल-फूल रहे हैं।

स्वामी विवेकानंद जी ने लोगों को त्याग और सेवा के लिए प्रेरित ही नहीं किया, बल्कि रामकृष्ण मिशन के माध्यम से सेवा के अनेक प्रकल्प भी शुरू किए। उनके विचार में नर सेवा ही नारायण सेवा है। इस चिंतन को अपना आदर्श बनाते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कुछ कार्यकर्ताओं ने 'सेवा भारती' की स्थापना की। सेवा, समर्पण और संस्कार के द्वारा समाज को समरस एवं सद्भावना पूर्ण बनाने के दृढ़ निश्चय ने दिल्ली जैसे महानगर की झुग्गी-झोपड़ियों के बीच 1979 में सेवा के विभिन्न कार्यों का शुभारम्भ किया। स्वयं सेवा से प्रेरित हो धीरे-धीरे कार्यकर्ता जुड़ते गए, दानदाता मिलते गए और दिल्ली के विभिन्न अभावग्रस्त स्थानों पर केन्द्र खुलते गए।

स्वामी जी कहते हैं, ''दूसरों के लिए रत्ती भर काम करने से भीतर की शक्ति जाग उठती है। दूसरों के लिए

रत्ती भर सोचने से धीरे-धीरे हृदय में सिंह का सा बल आ जाता है।'' इस शक्ति के आधार पर ही वर्तमान में पूरी दिल्ली में हजारों प्रकल्प सेवा भारती के चल रहे हैं, जिनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, संस्कार और सामाजिक सुरक्षा प्रमुख हैं। शास्त्रों में कहा भी गया है कि जो भगवान के दासों की सेवा करता है वही भगवान का सर्वश्रेष्ठ दास है। यह बात सर्वदा ध्यान में रखनी चाहिए. .. ''नि:स्वार्थपरता ही धर्म की कसौटी है। जिसमें जितनी ही अधिक नि:स्वार्थपरता है वह उतना ही आध्यात्मिक है तथा उतना ही शिव के समीप।''

स्वामी जी दान के महत्व को बताते हैं, ''दान से बढ़कर और कोई धर्म नहीं है। सबसे अधम मनुष्य वह है जिसका हाथ सदा खिंचा रहता है और जो अपने लिए ही सब पदार्थों को लेने में लगा रहता है, और सबसे उत्तम पुरुष वह है जिसका हाथ हमेशा खुला रहता है। हाथ इसलिए बनाए गए हैं कि सदा देते रहो।''

सेवा भारती का मूल दर्शन स्वामी जी का चिंतन है। स्वामी जी अपने भाषणों में बार-बार कहते हैं, ''कुछ भी न माँगो, बदले में कोई चाह न रखो। तुम्हें जो कुछ देना हो, दे दो। वह तुम्हारे पास वापस आ जाएगा, लेकिन आज ही उसका विचार मत करो। वह हजार गुना हो वापस आएगा पर तुम अपनी दृष्टि उधर मत रखो।''

42 वर्ष की मेहनत और तपस्या ने सेवा भारती में नई चुनौतियों का साहसपूर्ण सामना करने की क्षमता विकसित कर दी है। बच्चों, युवतियों, युवक तथा महिलाओं के बीच विविध सेवा कार्यों ने अपना सकारात्मक प्रभाव डाला है। स्वामी जी के शब्द सेवा भारती को निरन्तर प्रेरणा देते रहे हैं। स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं, ''क्या तुम अपने भाई-मनुष्य जाति को प्यार करते हो? ईश्वर को कहाँ ढूंढने चले हो- ये सब गरीब, दुखी, दुर्बल मनुष्य क्या ईश्वर नहीं हैं? इन्हीं की पूजा पहले क्यों नहीं करते? गंगा तट पर कुआं खोदने क्यों जाते हो? प्रेम की असाध्य साधिनी शक्ति पर विश्वास करो...''

असंख्य झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले परिवारों और बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कारित करने का दायित्व सेवा भारती बखूबी निभा रही है। नर्सरी से 5वीं कक्षा तक बाल बालिका संस्कार केन्द्रों के द्वारा यह कार्य सुचारू रूप से हो रहा है। विवेकानन्द जी अपने भाषणों में शिक्षा पर विशेष बल देते थे। उनका कहना था, ''जब तक करोड़ों भूखे और अशिक्षित रहेंगे तब तक मैं प्रत्येक आदमी को विश्वासघातक समझूँगा जो उनके खर्च पर शिक्षित हुआ है, परन्तु जो उन पर तनिक भी ध्यान नहीं देता।''

स्वामी जी के शब्दों में ''अपने भाइयों का नेतृत्व करने का नहीं, वरन् उनकी सेवा करने का प्रयत्न करो। नेता बनने की उस क्रूर उन्मत्तता ने बड़े-बड़े जहाजों को इस जीवन रूपी समुद्र में डुबो दिया है।''

इस कार्य के लिए दलबंदी ईर्ष्या और आत्मप्रतिष्ठा को सदा के लिए छोड़कर संगठित होने की आवश्यकता है। एकजुट होकर सेवा के लिए साथ-साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। वास्तव में स्वामी जी की भाँति मुक्ति या भक्ति की परवाह किये बिना मौन भाव से सेवा करना ही नर सेवा नारायण सेवा है। इसको अपना ध्येय वाक्य मान सेवा भारती, समाज की सहायता से आस्था, एकता, शांति की ओर राष्ट्र की चेतना को जागरूक बना रही है। इसके साथ-साथ चल चिकित्सा के द्वारा जन सामान्य को स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान कर, युवा वर्ग में स्वावलम्बन का भाव जगाने के लिए सिलाई के साथ-साथ कम्प्यूटर केन्द्रों को आरम्भ कर सेवा के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग कर रही है। इस कार्य में महिलाओं का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। शिक्षिका, निरीक्षिका के साथ-साथ महिला कार्यकर्ताओं की टोलियाँ बस्ती सम्पर्क के द्वारा बस्तियों में घर-घर सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना का विस्तार कर रही हैं।

देश-विदेश का भ्रमण करते हुए स्वामी जी असंख्य लोगों के सम्पर्क में आए। इस दौरान वे मानव मन की कमजोरियों को भी भली प्रकार जान गए थे। स्वामी जी कहते हैं, ''कमजोरी का इलाज कमजोरी का विचार नहीं पर शक्ति का विचार करना है...। हमने अपने हाथ अपनी आँखों पर रख लिए हैं और चिल्लाते हैं कि सब ओर अंधेरा है।''

यदि ये सद्गुण हमारे पास हैं, तभी हम स्वामी जी की आकांक्षाओं की पूर्ति कर सकते हैं, यही स्वामी जी की इच्छा और आशीर्वाद है।

यह प्रसन्नता की बात है कि आज सेवा भारती के हजारों कार्यकर्ता स्वामी विवेकानंद जी के सपनों को साकार करने में दिन-रात एक कर रहे हैं। ❐

# रहस्य

■ आशीष शुक्ला

सुन्दरपुर छोटा परन्तु एक खुशहाल राज्य था। वहां का राजा वीरभद्र अत्यंत दलायु, पराक्रमी तथा प्रजा पालक था। वह अपनी प्रजा को संतान की तरह चाहता था तथा प्रजा भी राजा वीरभद्र को बहुत चाहती थी। राजा राज्य धन-धान्य से भरपूर था, किसी को कोई कमी नहीं थी। सभी लोग सुखी थे, लेकिन उनकी खुशी पड़ोसी राज्य विशालगढ़ के राजा प्रताप सिंह से नहीं देखी गई। वह हमेशा सुन्दरपुर पर चढ़ाई करने का मौका तलाशता रहता था।

एक दिन अचानक सुन्दरपुर पर विशालगढ़ की सेना ने हमला कर दिया। सुन्दरपुर की सेना ने भी मुंहतोड़ जवाब दिया। घमासान युद्ध छिड़ गया, लेकिन युद्ध ने जल्दी ही एक नया मोड़ ले लिया। सुन्दर पुर का सेनापति लड़ाई में मारा गया। सेना का मनोबल बुरी तरह से टूट गया। ऐसे समय में राजा वीरभद्र आगे आए और उनहोंने खुद लड़ाई के मैदान पर मोर्चा संभाला। अधिक समय तक यह अभियान भी सफल नहीं रहा, क्योंकि राजा वीरभद्र घायल होकर बेहोश हो गए। जब उन्हें होश आया तो उन्होंने स्वयं को शयनकक्ष में पाया जहां राजवैद्य उनका उपचार कर रहे थे। वीरभद्र बहुत हताश हो चुके थे। विशालगढ़ की सेना राजमहल की ओर बढ़ रही थी। युद्ध जीतने की आशा दूर-दूर तक नजर नहीं आ रही थी। ऐसे समय में वीरभद्र को राज ज्योतिषी महादेव की याद आई। महादेव एक ऐसा ज्योतिषी था, जिस पर सारा सुंदरपुर अटूट विश्वास रखता था। वह जो भी ज्योतिषीय गणना के आधार पर कह देता उसे पत्थर की लकीर समझा जाता था। महाराज ने महादेव को अपने कक्ष में बुलाया और भरे कंठ से पूछ बैठे, महादेव क्या हम हार जाएंगे? पूछते हुए राज की आँखों में आंसू आ गए। उदासी उनके चेहरे पर साफ झलक रही थी। अपने महाराज से 1 दिन का समय मांगा और अपने घर आ गया। घर आकर वह ज्योतिषीय गणना करने में जुट गया। देर तक गणना करने के बाद वह जिस नतीजे पर पहुंचा वह निराशाजनक था। गणना के आधार पर सुन्दरपुर की हार निश्चित थी। महादेव परेशान हो उठा। उसकी आंखों में बार-बार राजा का आंसुओं भरा चेहरा याद आ जाता। वह समझ नहीं पा रहा था कि राजा को अपना निर्णय कैसे बताएगा। महाराज को दुखी नहीं देखना चाहता था। वह जानता था कि उसका निर्णय सुनकर महाराज और सेना दोनों मानसिक रूप से पहले ही हार जाएंगे लेकिन फिर भी वह झूठ नहीं बोलना चाहता था, क्योंकि सुन्दरपुर की हार निश्चित थी। जीतने की भविष्यवाणी बाद में झूठी साबित होगी जिससे उसकी प्रतिष्ठा धूमिल हो सकती थी। इसी अधेड़बुन में वह राजमहल पहुंचा और राजा के सामने उपस्थित हुआ। उसे देखकर हताश वीरभद्र ने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई। वह सिर झुकाए बैठा रहा। महाराज प्रणाम महादेव ने कांपते स्वर में कहा। क्या हम सचमुच हार जाएंगे महादेव विशालगढ़ की सेना ने राजमहल घेर लिया है! वीरभद्र दुखी होकर बोले, नहीं माहराज, नहीं ऐसा कदापि नहीं होगा, हम निश्चित जीतेंगे। क्या! वीरभद्र उठ खड़े हुए। हाँ महाराज यह सच है। यह मैं नहीं, बल्कि ज्योतिषीय गणना कह रही है। महादेव के मुंह से यह सुनकर वीरभद्र की आंखें भर आईं। उनमें अद्वितीय आत्मविश्वास जाग उठा, क्योंकि महादेव की भविष्यवाणी गलत नहीं हो सकती थी। वह एकाएक उमंग और जोश से भर उठे। उन्होंने महादेव को गले से लगा लिया और वह तुरन्त ही युद्ध भूमि की ओर प्रस्थान कर गए। महादेव की भविष्यवाणी सुन्दरपुर की सेना में फैल गई। सारे सैनिक यह सुनकर वीरता से भर उठा और राजा वीरभद्र के नेतृत्व में शत्रु पर कहर बनकर टूट पड़े। भयंकर युद्ध छिड़ गया हजारों सैनिक मारे गए, लेकिन देखते ही देखते सुन्दरपुर की सेना ने विशालगढ़ की सेना को पछाड़ दिया। विशालगढ़ के सैनिक सिर पर पैर रख भाग खड़े हुए। युद्ध समाप्त हो गया। सुन्दर की विजय हुई। सारे सुन्दरपुर में खुशियां छा गईं। सबसे ज्यादा प्रसन्न महाराज वीरभद्र थे।

उन्होंने इस अवसर पर एक बड़े समारोह का आयोजन किया, जिसमें राज ज्योतिषी महादेव का सम्मान किया। सम्मानित होते समय महादेव सुखद आश्चर्य में डूबा हुआ था। उसने तो बस राजा और सेना का आत्मविश्वास न टूटे इसलिए झूठ बोला था, लेकिन उसका झूठ सच साबित हुआ। उसकी ज्योतिषीय गणना गलत कैसे हो गई उसके लिए रहस्य था। ❐

# महकते फूलों का पर्व बसन्त

■ गंगा प्रसाद 'सुमन'

जब मोटर की बैटरी बहुत समय तक काम करते-करते शिथिल हो जाती है तो चार्जर के साथ जोड़कर उसमें बिजली भर दी जाती है और फिर वह नई की तरह काम करना आरंभ कर देती हैं, उसी प्रकार ऋतुराज बसन्त हमारे तन-मन में चार्जर का काम कर आगामी काल के लिए उत्साह, ऊर्जा, उल्लास, उमंग का संचय और संचार कर देता है, वर्ष में एक बार आध्यात्मिकता की बैटरी चार्ज कर लेने से आध्यात्मिक क्रियाओं का स्रोत प्रवाहित होता रहता है, प्रकृति भी दबे हुए रोगों को इन्हीं दिनों उभार कर बाहर निकालने का प्रयत्न करती है, चिकित्सा शास्त्री भी शरीर शोधन व कायाकल्प की विशेष क्रियाएं इन्हीं दिनों कराते हैं।

ऋतुओं का राजा बसन्त पर्व माघ सुदी पंचमी से आरंभ होता है। भगवती सरस्वती का जन्म दिन बसन्त पंचमी को होने के कारण इसे विद्या जयन्ती भी कहते हैं। विद्या और ज्ञान की अभिवृद्धि देखकर मां सरस्वती प्रकृति रूप में हंसती हैं, वन-उपवन में खिलखिलाती हैं। मुस्कान से पुष्प बिहंस जाते हैं। पक्षी भी मनोहारी वातावरण में किलकारी भरभर कर ऊंची उड़ानें भरना आरंभ कर देते हैं। भ्रमर गुंजन, कोकिला कलख और मुकुलों के श्रृंगार के साथ बसन्त धरा पर अवतरित होता है।

देवी सरस्वती के हाथ में वीणा है, उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए वीणा व मयूर प्रतीक है - मधुरता, विनम्रता, सन्ननता, शिष्टता, आत्मीयता और उल्लास व आनंद के जैसे इस ऋतु में पुष्प और सौरभ यत्र-तत्र विकसित और प्रसारित हो जाते हैं, उसी प्रकार मानव नैतिक मूल्यों और उत्तम व्यक्तित्व का विकास न केवल साक्षरता से अपितु विद्या और ज्ञान से ही संभव है। धन-सम्पदा का संग्रह न करके विद्या और ज्ञान का संग्रह किया जाना चाहिए।

कुसुमाकर की बसन्त पंचमी से हमारी अनेक स्मृतियां जुड़ी हुई हैं। इसी दिन महाराजा रंजीत सिंह विशेष दरबार लगाते थे । उनके दरबार में सभी सैनिक पीले वस्त्र पहन कर पथ-संचलन किया करते थे। इस परम्परा का पालन आज भी निहंग सिख करते हैं। शहीद शिरोमणि वीर भगत सिंह ने 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला' का जोशीला स्वर देकर भारत के देशभक्तों में राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव जगा दिया था।

मुगल काल में अन्याय व अत्याचार का प्रतिकार करते हुए बसन्त पंचमी के दिन ही वीर हकीकत राय ने गो, गंगा, गायत्री के लिए प्राण न्योछावर कर दिये थे। उस अमर शहीद की स्मृति में बटाला (पंजाब) में आज भी बसन्त मेला लगता है। ठीक भी है- 'शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले' इसी पावन दिवस पर हिन्दी के क्रान्तिकारी कवि महाप्राण 'निराला' इस धरा धाम पर अवतरित हुए थे।

हर जड़ चेतन में ऋतुराज बसन्त में सृजनात्मक उमंग परिलक्षित होती है। यह उमंग भावी उल्लास में विकसित होना चाहिए। हम सब मिलकर श्वेताम्बरा वीणापाणिनी सरस्वती के चरणों में बैठकर ज्ञान, विद्या, मानवीय मूल्यों और ज्योतिर्गमय का प्रसाद पाते रहें। वैभव के लिए भटके नहीं। अभावों में भी पुष्प की भांति झूमते हुए मुस्कुराते रहें। ❐

# हरी पत्ती खाने के लाभ

■ रितेश

सृष्टि में यदि खाद्य पदार्थों की बात करें तो ईश्वर ने सर्व प्रथम हरी पत्तियां (वायु तत्व) का सृजन किया मानो ईश्वर मनुष्य को संकेत दे रहा हो कि मैंने तुम्हारे भोजन की पहली खुराक तुम्हें दे दी है। वास्तविकता है कि हमारे भोजन में यदि पहली खुराक पत्तियों की हो सके तो स्वास्थ्य की ओर उठने वाला यह पहला कदम साबित हो सकता है।

विचारणीय है कि हमारे सभी देवताओं का पूजन भी पत्तियों से किया जाता है। क्यों? क्योंकि यही उचित है। देवताओं में प्रथम पूज्य गणपति जी महाराज का पूजन दूर्वा से किया जाता है, दूर्वा के बिना गणेश जी मोदक का भोग स्वीकार नहीं करते।

इसी प्रकार विष्णु भगवान का भोग तुलसी पत्र तथा शिव जी का भोग बेल पत्र के बिना सम्भव नहीं है। ऐसा इसीलिए विधान बनाया गया जिससे मनुष्य भी इससे सीख ले और अपने भोजन में पत्तियों को प्रथम स्थान दे।

पत्तियों में क्लोरोफिल नामक तत्व पाया जाता है जो शरीर में रोगों से लड़ने की क्षमता पैदा करता है। यदि आपके शरीर में यह तत्व रहेगा तो कोई भी संक्रामक रोग आप पर आसानी से आक्रमण नहीं कर सकेगा। बात चाहे क्लोरोफिल की हो आयोडिन की अथवा अन्य खनिज लवणों की, यह सारे तत्व आग पर चढ़ने से नष्ट हो जाते हैं, अतः उत्तम है कि इसका उपयोग आग पर चढ़ाए बिना ही करना चाहिए।

व्यवहार में पहली खुराक के रूप में आसानी से उपलब्ध कुछ हरी पत्तियां जैसे कि -

धनिया, पोदीना, सहजन पत्ते, गेहूं के ज्वारे, पालक, मूली के पत्ते, कढ़ी पत्ता, बेल पत्र, तुलसी, दूर्वा आदि को धोकर, पानी मिलाकर सिलबट्टे या मिक्सी में पीसकर छान लें। इसी के साथ कुछ हरा आंवला, कद्दू, लौकी आदि भी डाल लें। स्वाद के लिए गुड़ या शहद आदि भी मिला स्वादिष्ट जूस सर्वोत्तम है। यह शोधक भी है और अनेक आवश्यक तत्वों की पूर्ति करता है।

मौसम होने पर सस्ता भी होता है। दोपहर के अल्पाहार के साथ भी उपरोक्त वर्णित ३-४ तरह की पत्तियों को मिलाकर स्वादिष्ट चटनी का सेवन अति लाभकारी है। सदी के मौसम में विशेष रूप से मूली, पालक, धनिया, मेथी, बथुआ आदि को पीसकर आटे के साथ मिलने का रिवाज भी इसीलिए बनाया गया है ताकि पत्तियों का पूरा लाभ मिल सके।

डॉक्टर शरीर में कैल्शियम की पूर्ति हेतु दूध का सेवन करने की सलाह देते हैं। यह सत्य है कि दूध में कैल्शियम तो है किंतु दूध में यूरिक एसिड तथा कोलेस्ट्रॉल शरीर को रोगी बनाते हैं। दूध की शुद्धता भी आज के युग में पूर्ण रूप से संदिग्ध ही है। जिस जानवर का दूध हम पीते हैं उसकी शारीरिक रुग्णता का प्रभाव भी उसके दूध के माध्यम से हमारे शरीर पर पड़ता है। यदि शरीर में

कैल्शियम की कमी है तो हम आपको बताना चाहेंगे कि वैज्ञानिक शोधों में आश्चर्यजनक सत्य उजागर हुए हैं।

जहां एक ओर मां के दूध में 28 कैल्शियम, गाय के दूध में 120, भैंस के दूध में 210 कैल्शियम पाया जाता है, वहीं शलजम की पत्ती में 710, इमली की पत्ती 1485 तथा सरसों के पत्तों में 3095 कैल्शियम पाया जाता है। यदि हम कुछ पत्तियों का सेवन करने लगें तो कैल्शियम की पूर्ति भी हो जाएगी और यूरिक एसिड व कोलेस्ट्राल के दुष्प्रभावों से हम बच जाएंगे।

पत्तियों में शोधन का गुण होने के कारण यह अंदर संचित मल को साफ करने में मददगार हैं। पत्तियों के इसी गुण के कारण इनका सेवन करने से शरीर में मल का संचय रुक जाता है। शरीर के अंदर मल की सड़न के कारण बनने वाली गैस तथा एसिड्स से मुक्ति मिलने लगती है।

इसी कारण पत्तियों का सेवन करने वाले सभी जानवरों के मल में भी बदबू नहीं होती जैसे पत्तियों का सेवन करने वाला हाथी, बकरी, गाय, भैंस, घोड़ा आदि। इन पशुओं से किसी प्रकार का संक्रामक रोग भी नहीं फैलता, जब कि प्लेग जो चूहों से फैलता है, बर्ड फ्लू जो मुर्गियों से फैलता है तथा स्वाइन फ्लू जो सुअर से फैलता है, ये सभी जानवर पत्तियों का सेवन नहीं करते हैं। बिल्लियां और कुत्ते मांसाहारी होते हैं तथा दूध के शौकीन होते हैं। इनका मल अत्यंत दुर्गंधयुक्त तथा चिपकने वाला होता है। आश्चर्य की बात है सर्वश्रेष्ठ कहलाने का अधिकारी मनुष्य का मल सबसे अधिक दुर्गंध युक्त होता है क्योंकि यह अनाज, पक्वाहार, मांसाहार तथा दूध का सबसे अधिक शौकीन होता है।

यदि शरीर को रोगमुक्त बनाना है तथा तप-सेवा साधना में प्रगति करनी है तो भोजन को भी सूक्ष्म बनाना अति आवश्यक है। भोजन के चार तत्व हैं:-

वायु तत्व (पत्तिया) ग्रीनजुस

अग्नि तत्व (फल)

जल तत्व (सब्जियां)

पृथ्वी तत्व (अनाज)।

इनमें सबसे सूक्ष्म वायु तत्व ही है जो पत्तेदार शाक भाजी में पाया जाता है। यह पत्तियां क्षारीय प्रकृति की होने के कारण रक्त में अम्लता को कम करती है। परिवार के तमाम सदस्य ग्रीनजुस पिए। ❐

*(लेखक द्वारका जिले के संयोजक हैं)*

## चित्रकारी और गीत संगीत प्रतियोगिता

गत 1 फरवरी को बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर सेवा भारती दिल्ली की प्रेरणा से सरस्वती शिशु मंदिर विद्यालय, अमर कॉलोनी नई दिल्ली में बच्चों के बीच प्रश्नोत्तरी, चित्रकारी व गीत-संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री विनोद बंसल ने बच्चों के समक्ष बसंत पंचमी के महत्व को बताते हुए बदलते मौसम में और अधिक ऊर्जा से पढ़ाई कर परिवार, समाज व राष्ट्र के विकास में बढ़ चढ़ कर योगदान करने का आह्वान किया। उन्होंने यह भी कहा कि विद्यालयों की शिक्षा में तकनीकी का प्रयोग भरपूर किया जाना चाहिए। इसके लिए उन्होंने क्षेत्र में कार्यरत व्यवसायियों के सहयोग का आह्वान भी किया।

कार्यक्रम का विहिप प्रवक्ता व निगम पार्षद श्री शरद कपूर के साथ प्रधानाचार्य श्रीमती अंजू शर्मा व समाजसेवी श्री संजय सिकरिया ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। इस अवसर पर यूबोन कंपनी की ओर से श्री राहुल और अमन उपस्थित रहे! प्रतियोगिताओं में सभी बच्चों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। स्कूल की प्राध्यपिका श्रीमती अंजू शर्मा के हाथों बच्चों को पुरस्कार दिया गया! कार्यक्रम के उपरांत कंपनी की ओर से विद्यालय की कक्षाओं के लिए बब्लू टूथ स्पीकर भी प्रदान किए गए। ❐

# सत्येंद्र नाथ बोस के नाम पर है बोसन परमाणु

जब विज्ञान के क्षेत्र में भारतीयों के योगदान की बात आती है, तो हम सीधे हज़ार-दो-हज़ार साल पीछे पहुँच जाते हैं। हम शून्य की खोज और चिकित्सा-विज्ञान की बात करते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं जिस वक्त भारत को ग़ुलामी ने जकड़ा हुआ था, दुनिया में पहला विश्व युद्ध छिड़ा हुआ था, उस वक्त अल्बर्ट आइंस्टाइन एक भारतीय गणितज्ञ के प्रशंसक बन गए थे? इस हद तक कि उस गणितज्ञ के शोध को आइंस्टाइन ने स्वयं जर्मन में अनुवाद किया। और इस तरह उस भारतीय गणितज्ञ की खोज का पूरे विश्व ने संज्ञान लिया। भारत में भी उनके कई किस्से प्रसिद्ध थे। कहते हैं कि एक बार कलकत्ता यूनिवर्सिटी में टीचर ने उनके पेपर से खुश होकर उन्हें 100 में से 110 नंबर दे दिए। जब महान वैज्ञानिक 'नील्स बोर' कलकत्ता में लेक्चर देते हुए एक प्रॉब्लम पर अटक गए, तो हमारे इन्हीं गणितज्ञ ने क्लास में उठकर झट से उस प्रॉब्लम को हल किया और फिर लेक्चर आगे बढ़ा। पहले विश्व युद्ध के दौरान जब भारत में अंग्रेज़ी रिसर्च पेपर नहीं आते थे, तो उन्होंने जर्मन और फ्रेंच भाषा सीखी। जिससे वे उन भाषाओं के रिसर्च पेपर पढ़ सकें। साथ ही, जाने-अनजाने में वे पहले व्यक्ति बने जिसने आइंस्टाइन के रिसर्च पेपर जर्मन से अंग्रेज़ी भाषा में ट्रांसलेट किए। संयोग कुछ ऐसा बना कि एक दिन आइंस्टाइन ने उधार चुका भी दिया! हम बात कर रहे हैं - श्री सत्येंद्र नाथ बोस की। प्रतिवर्ष 4 फ़रवरी को उनकी पुण्यतिथि होती है। बोस ने एक नई तरह की गणित का आविष्कार किया था, जिसे आज Bose Statistics कहते हैं। जिससे परमाणु कणों (sub-atomic particles) की फिजिक्स समझने में सहायता मिली। और आइंस्टाइन के साथ मिलकर उन्होंने पदार्थ की एक नई अवस्था की खोज की –Bose-Einstein Condensate. इसी अवस्था की उन्होंने 1924 में एक रिसर्च पेपर में बात की थी। और विश्वभर के वैज्ञानिकों ने दशकों तक शोध किया और पहली बार 1995 में आज ही एक दिन उस अवस्था को भौतिक रूप से सिद्ध कर पाए। बोस ने विज्ञान के क्षेत्र में इतनी गहरी छाप छोड़ी कि पूरा ब्रह्मांड जिन 2 श्रेणी के परमाणुओं से बना है, उन में से एक का नाम बोस को समर्पित है, जिन्हें Boson कहते हैं। पूरी दुनिया में उनका नाम था। विश्व के सभी बड़े वैज्ञानिक चाहते थे कि वे उनके साथ काम करें। लेकिन आइंस्टाइन के साथ काम करने के बाद वे वापिस भारत आ गए। 1926 में ढाका यूनिवर्सिटी में पढ़ाना शुरू किया और भारत के विभाजन के बाद कलकत्ता आकर बस गए। उनका सपना था उच्चस्तरीय विज्ञान को छात्रों तक उनकी मातृभाषा में पहुँचाना, एक्सपेरिमेंट के लिए उपकरणों को भारतीय टेक्नीशियंस से बनवाना। अपने शेष जीवन को उन्होंने इसी सपने को समर्पित किया। बोस का जीवन साहस, समर्पण व धैर्य का प्रतीक है। आज भारत को वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ज़रूरत है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ बोस भारत को विज्ञान के शिखर तक लेकर गए। राष्ट्रीय निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। ❒

# सेवा भारती का दीपक जलता रहे सदा

■ रंजीत दीक्षित

जिंदगी कर्मगति का अजब नजारा है
पुण्य और पाप कर्मों का ये खेल सारा है
जो बटोरा है यकीनन यहीं रह जाएगा
जो बांटा है वही कमाई है सहारा है।।

समर्पण सेवा संस्कार समरसता की भावना
संजोये मन में कुछ पुण्य कर्मयोगी जब मिल
आशा आश्रय समृद्धि ज्ञान दान के लिये
शुरू हुए समाज सेवा के पुनीत सिलसिले।।

अनाथ, अबला और निरक्षर कल्याण के लिए
'सेवा भारती' जन्मी वंचित उत्थान के लिए
'सेवा भारती' के दीप सहयोगी संचालक
प्रबल प्रकाशपुंज हैं सकल जहान के लिए।।

'सेवा भारती' संचालकों और सेवादारों के
निस्वार्थ योगदान सेवा पुण्य कर्मों का प्रताप
कहीं पीपल कहीं पे नीम और वटवृक्ष छायादार
त्रिवेणी बनके दीन दुखियों का हर रहे संताप।।

'सेवा भारती' की पुण्य पहल सक्षम, सोपान,
मातृछाया, उत्कर्ष उन्नयन, गोपालधाम
ये सब प्रत्यंग सेवा भारती की कर्मस्थली हैं
अंधेरा मिट रहा प्रकाशमयी ज्योति जली है।।

दिव्य कर्मों को दर्शाता एक उजला दर्पण
'सेवा भारती' प्रकाश स्तंभ 'सेवा समर्पण'
ये पुण्य कर्मों का सिलसिला चलता रहे सदा
'सेवा भारती' का दीपक जलता रहे सदा
सेवा भारती का दीपक ............

# धूमधाम से मना गणतंत्र दिवस

सेवा भारती, दिल्ली द्वारा संचालित प्रकल्प स्ट्रीट चिल्ड्रन्स प्रोजेक्ट में 24 जनवरी 2025, दिन शुक्रवार को गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का शुभारम्भ ध्वजारोहण के साथ हुआ। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमान अरुण शर्मा जी (निदेशक, अर्वाचीन शिक्षा संस्थान एवं विभाग संघचालक, यमुना विहार विभाग) थे, जो कि बैठक की व्यस्तता के कारण कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हो सके। मुख्य अतिथि के रूप में श्री प्रमोद शर्मा जी (जिला संघचालक, नन्द नगरी जिला एवं अध्यक्ष संत कृष्ण बोध शिक्षा सदन, बैंक कॉलोनी, मंडोली), विशिष्ट अतिथि श्री सुरेश गुप्ता जी(विभाग अध्यक्ष, वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन), स्वागत अध्यक्ष श्री दीन दयाल जी एवं श्री सतीश गुप्ता जी(प्रबंधन समिति, गौरी शंकर मंदिर, दिलशाद गार्डन) थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं भारत माता पूजन के साथ हुआ। उसके बाद कार्यक्रम के मुख्य अतिथियों के द्वारा ध्वजारोहण किया गया। समारोह में प्रकल्प की कार्यकारणी के सदस्य भी सम्मिलित हुए। ध्वजारोहण के उपरांत सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में केन्द्र की बालिकाओं द्वारा सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया गया। बच्चों के द्वारा मनमोहक योग एवं पिरामिड प्रदर्शन किया गया। बालिकाओं के द्वारा भी योग एवं आसनों का प्रदर्शन किया गया। कई लोकनृत्यों का भी मंचन केंद्र की बालिकाओं के द्वारा किया गया। इस बार के कार्यक्रम में बहुत छोटी-छोटी बालिकाओं के द्वारा भी बहुत ही सुंदर सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथियों का बौद्धिक एवं मार्गदर्शन उपस्थित जनसमूह को प्राप्त हुआ। श्रीमान प्रमोद शर्मा जी ने लोकमत परिष्कार के माध्यम से उपस्थित जन समूह को बताया कि वे मतदान करते समय देश को सबसे ऊपर रखकर मतदान करें। कार्यक्रम का समापन वन्दे मातरम् के साथ हुआ। उपस्थित सभी लोगों को प्रसाद के रूप में नमकपारे एवं बूंदी का वितरण किया गया। उसके बाद केंद्र में अध्ययन-अध्यापन करने वाले छात्र-छात्राओं एवं शिक्षक शिक्षिकाओं का सामूहिक भोजन हुआ। ❐

# मकर संक्रांति पर पंचकुंडीय हवन

सेवा भारती, स्ट्रीट चिल्ड्रन प्रकल्प, केशव सेवा केंद्र कलंदर कॉलोनी, दिलशाद गार्डन में 14 जनवरी को मकर संक्रांति का कार्यक्रम सामूहिक हवन के साथ सम्पन्न हुआ। इस वर्ष सामूहिक हवन में गोविंद बल्लभ भारत योग संस्थान के सदस्यों ने भी भाग लिया। श्री नरेश प्रताप सिंह जी (आर्य समाज, नंदनगरी जिला) भी हवन के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। सेवा बस्ती से 22 यजमानों ने पंचकुंडीय हवन में भाग लिया। इन 22 यजमानों में दो नव-विवाहित जोड़े भी सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम में कुल पाँच हवन कुंडों के द्वारा हवन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इनमें से 4 हवन कुंडों में बस्ती के यजमानों के द्वारा एवं एक हवन कुंड में जनवरी माह में जन्मदिन आने वाले 10 बच्चों ने सामूहिक हवन किया। यजमानों एवं बच्चों के अतिरिक्त सेवा बस्ती के लगभग 120 लोगों ने भी हवन कार्यक्रम में सहर्ष भाग लिया। हवन के उपरांत बच्चों को उपहार स्वरूप एक-एक कलम दिया गया। प्रकल्प की शिक्षिकाओं को एक-एक शॉल तथा शिक्षकों को एक-एक मफलर वितरित किया गया। तत्पश्चात उपस्थित सभी लोगों को खिचड़ी का प्रसाद वितरित किया गया। खिचड़ी की व्यवस्था केंद्र पर अध्ययन करने वाले बच्चों के द्वारा ही की गई थी।

इसी कार्यक्रम के निमित्त आगामी दिल्ली विधानसभा चुनाव के संदर्भ में दिल्ली के मतदाताओं को बिना किसी लालच, लोभ और बहकावे में आकर दिल्ली के बेहतर भविष्य के लिए एक अच्छी और साफ सुथरी सरकार बनाने के लिए लोकमत परिष्कार का कार्यक्रम में आयोजित किया गया। इसके मुख्य वक्ता श्री ज्ञान प्रकाश गुप्ता जी थे, जिन्होंने दिल्ली की वर्तमान परिस्थिति को लेकर उपस्थित जन समूह के समक्ष अपनी बातों को रखा। बढ़ते प्रदूषण, बढ़ते अपराध, भ्रष्टाचार और बढ़ती अराजकता आदि गंभीर और आम लोगों से जुड़े विषयों के बारे में लोगों को बताया। किस प्रकार बढ़ते प्रदूषण के कारण दिल्ली वालों के स्वास्थ्य, बच्चों की शिक्षा, रोजाना काम-काज करने वाले लोगों पर कितना बुरा असर पड़ रहा है।

इसके बाद श्री राज नारायण जी (संगठन मंत्री, सेवा भारती, नन्द नगरी जिला) ने भी दिल्ली की वर्तमान परिस्थितियों पर लोगों से संवाद किया और उन्हें दिल्ली को एक बेहतर विकल्प चुनने के लिए प्रेरित किया। ❐

# सामूहिक विवाह के कार्यक्रम

**बुराड़ी जिला**

गत वर्षो की भाँति इस वर्ष भी बसंत पंचमी के अवसर पर 2 फरवरी को सेवा भारती बुराड़ी जिले द्वारा चयनित 11 अभावग्रस्त परिवारों की कन्याओं का शुभ विवाह श्री गिरिराज भवन, श्री गोपीनाथ सावित्री देवी फार्म हाउस कुशक नम्बर 1 कादीपुर में सनातनी रीति-रिवाज के साथ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य सहयोगी भामाशाह की भूमिका में श्री मनोज सेठिया, अंजू सेठिया व सेठिया परिवार की रही, जिनके सहयोग से ये बड़ा कार्य सरलता से सम्पन्न हो सका। घोड़ी व मिलिट्री बैंड ने बारात व अतिथियों की अगवानी की व सेठिया परिवार द्वारा स्वागत द्वार पर पगड़ी व माला पहना कर समस्त अतिथियों का स्वागत किया। मिलिट्री बैंड की अगवानी में वर व कन्या को स्टेज तक ले जाया गया। सेवा भारती दिल्ली प्रान्त अध्यक्ष व सेठिया परिवार व अन्य गणमान्य अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभ आरम्भ किया। सेवा भारती दिल्ली प्रान्त के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल जी ने अपने विचार रखे और सेवा भारती द्वारा संचालित सेवा कार्यो की जानकारी दी व दानदाताओं के प्रति आभार भी व्यक्त किया। श्री देविन्दर जोशी जी बुराडी जिला संघचालक ने सभी नव युगल को सुखी दाम्पत्य जीवन का आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात जयमाला का कार्य सम्पन्न हुआ। सभी ने भोजन में विविध व्यंजनों का आनंद लिया। फेरे का कार्य संगीतमय व्यवस्था के साथ ग्यारह आचार्य के द्वारा विधि विधान से सम्पन्न कराया गया और अंत मे दान स्वरूप नित्य प्रतिदिन की आवश्यकता की चीजें, रामचरित मानस की प्रति, मिठाई, व सुखी दाम्पत्य जीवन की कामनाओं के साथ कन्याओं को विदा किया। इस अवसर पर सेवा भारती दिल्ली प्रान्त के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल, उपाध्यक्ष श्री हेमंत जी, सह संगठन मंत्री श्री सुनील जी, विभाग से मंत्री श्री आजाद सिंह जी, संगठन मंत्री दीपक जी, सामाजिक व महिला कार्य प्रमुख रीना शर्मा जी, व जिले व नगरों की पूरी टीम उपस्थित रही।

**सरस्वती जिला**

सरस्वती विहार जिले द्वारा 2 फरवरी को 11 कन्याओं का विवाह संपन्न हुआ। श्री संजय जिंदल, सेवा भारती दिल्ली के संगठन मंत्री श्री शुकदेव, विभाग के अध्यक्ष श्री मुकेश गोयल, मंत्री रामसेवक जी ने दीप प्रज्जवलित किया। कार्यक्रम में प्रांत संघचालक डॉ. अनिल अग्रवाल, प्रांत उपाध्यक्ष श्री हेमंत जी व मातृछाया मियांवली प्रकल्प प्रमुख श्री राकेश कथूरिया का भी सान्निध्य मिला। विवाह के आयोजन एवं व्यवस्थाओं में सहयोग एवं मार्गदर्शन प्रांत के कार्यकारिणी सदस्य श्री विजेंदर गुप्ता का रहा। प्रांत कार्यकारिणी से बहन शिवाली अग्रवाल का भी विवाह में सहयोग रहा। श्री सुभाष अग्रवाल भी विवाह समारोह में शामिल हुए। विवाह के भोजन का व्यय जिले ने निवासरत प्रसिद्ध व्यवसायी श्री रमेश पंवार का रहा। टेंट का सारा व्यय भी स्थानीय दानदाताओं के सहयोग से किया गया। श्रीमती संध्या वात्सायन ने कुछ स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं को इस कार्यक्रम के लिए जोड़ा गया। उपाध्यक्ष श्री विनोद जैन की देखरेख में संपन्न हुआ। मंच संचालन का कार्य जिले की महिला समिति मंत्री बहन संगीता शर्मा जी एवं सहमंत्री सुनीता दहिया जी द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त जिले की महिला समिति की अध्यक्षा आशा

कथूरिया जी, उपाध्यक्षा पूनम भारद्वाज जी, अचला चंडोक जी, सदस्या सरोज रस्तोगी जी,एवं ज्योति जी,शिवानी जी, रेनू जी द्वारा विवाह की सभी रस्मों को पूर्ण करवाया गया। कार्यक्रम स्थल की आंतरिक व्यवस्था की चिंता जिला सहमंत्री श्रीमान ज्ञान स्वरूप तिवारी जी एवं निरीक्षिका बहन सुनीता जी द्वारा की गई। भोजन वितरण की पूर्ण व्यवस्था कोष प्रमुख नरेश गर्ग जी, जिला सहमंत्री श्रीमान दितेश अग्रवाल जी एवं पीतमपुरा नगर के मंत्री अनूप गर्ग जी द्वारा संभाली गई। दान दी गई वस्तुओं की संभाल एवं दान प्राप्त करने की जिम्मेदारी सहकोष प्रमुख श्रीमान रमेश जी द्वारा की गई। कार्यक्रम में 1000 से ज्यादा लोग शामिल हुए।

**मोती नगर जिला**

सेवा भारती जिला मोती नगर द्वारा बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर 2 फरवरी को सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया। सरस्वती पूजन के साथ विवाह समारोह प्रारंभ हुआ। घासी राम मोदी जी, कृष्ण मोदी जी, शिव कुमार मोदी जी, शरद श्रीवास्तव जी, श्रीमान रविंदर लोखड़े जी, प्रमोद अग्रवाल जी, कविता अग्रवाल जी, सपना जी, नरेंद्र गुप्ता जी, डॉ. जय किशन जी, शंकर जी, श्याम लाल जी, विशम्बर वशिष्ठ जी आदि ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया। समारोह में मेहसाणा के सांसद श्रीमान पटेल जी ने शुभ आशीर्वाद और संदेश दिया। जिले के पदाधिकारी सुनील गर्ग, मुनीश त्यागी, देवजीत सिंह, उदय सिंह, टी अग्निहोत्री, भास्कर शर्मा, पारस रेनू, विनीता अग्निहोत्री, किरण शर्मा, डॉ अनीता नीलम और विपिन शर्मा ने भरपूर योगदान दिया। विभाग मंत्री रामसेवक जी ने भी अवलोकन किया। प्रसिद्ध समाज सेवक मनोज जिंदल जी का अभूतपूर्व योगदान रहा।

**जनकपुरी जिला**

सेवा भारती जनकपुरी जिला (केशव पुरम विभाग) द्वारा 2 फरवरी को छह कन्याओं का सामूहिक विवाह कराया गया। इसमें श्री देवेन्द्र मोहन कत्याल मुख्य अतिथि थे। उनका स्वागत श्री श्याम गुप्ता जी, विभाग उपाध्यक्ष एवं जिला संरक्षक श्रीमान मामचंद जी द्वारा किया गया। श्री अशोक सतीजा जी (प्रधान बहावलपुर समाज), श्री अश्वनी खन्ना (प्रधान, श्री कृष्ण सनातन धर्म मंदिर, बी 2 जनकपुरी), श्री राज कुमार (माननीय नगर संघचालक हरी नगर), डॉ रेणु सहगल (तेजस्वी होमोपैथिक क्लिनिक, तिलक नगर), दीप्ति बहन जी, सरदार महेंद्र सिंह जी बाली (माननीय जिला संघचालक, जनकपुरी) की गरिमामय उपस्थिति रही। विधिवत विवाह संस्कार के पश्चात कुटुंब प्रबोधन के जिला कार्यकर्ता श्रीमान सुरेश ने वर-वधू एवं उनके परिवार को भारतीय परिवार पद्धति एवं मूल्यों के बारे में बताया। प्रांत उपाध्यक्ष श्रीमान हेमंत जी, कार्यकारणी सदस्य श्रीमान विजेंद्र जी, विभाग प्रचारक श्रीमान मनीष जी के

अलावा नवरतन जी, राजेश गर्ग जी, समरसता प्रमुख केवल जी, हरी नगर नगर शारीरिक प्रमुख रवि जी, हरिचंद जी टुटेजा, श्री सुनील जी रहेजा (हिन्दू जागरण मंच), श्रीमान हिम्मत जी आदि ने योगदान दिया।

**तिलक नगर जिला**

तिलक नगर जिला द्वारा गौरी शंकर मन्दिर, ए-4, पश्चिम विहार में 5 जोड़ों का विवाह विधिवत सम्पन्न हुआ। पूरी दिल्ली में आयोजित सामूहिक निमित्त पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी 161 लहंगे श्री नीरज गुप्ता जी (सूर्या साड़ी) मालीवाड़ा द्वारा दिये गये। इस आयोजन में श्री नीरज जी ने उपस्थित रहकर वर-वधू को आशीर्वाद दिया। डॉ राम कुमार जी, मंत्री, राष्ट्रीय सेवा भारती, श्री संजय जिन्दल जी, उपाध्यक्ष, सेवा भारती दिल्ली एवं जिले के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

**नरेला जिला**

गत 2 फरवरी को बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर प्रभु कृपा से नरेला जिले में 09 बेटियों का विवाह धूमधाम से, हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ। समस्त सनातन समाज ने बढ़चढ़ कर सहयोग दिया। सभी सदस्यों एवं संगठन श्रेणी से जुड़े कार्यकर्ताओं की कड़ी मेहनत से विवाह समारोह निर्विघ्न संपन्न हुआ, इंद्र देव की भी कृपा रही। सभी ने मिलजुल कर कार्य किया व दूसरों का साहस बढ़ाया। प्रांत सह संगठन मंत्री श्रीमान सुनील जी, श्रीमान कमलापति जी और विभाग उपाध्यक्ष श्रीमान खुशी राम जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

**तिलक जिला**

सेवा भारती तिलक जिला द्वारा 2 फरवरी बसंत पंचमी के पावन अवसर पर पांच कन्याओं का सामूहिक विवाह का आयोजन श्री गौरी शंकर मंदिर ए-4 पश्चिम विहार में किया गया। इसका शुभारंभ माँ सरस्वती पूजन के साथ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री वीरेंद्र नागपाल जी (माननीय विभाग संघ चालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) एवं संरक्षक श्री के पी भार्गव जी ने दीप प्रज्वलित किया। उनके साथ प्रांत से डॉ. श्री संजय जिंदल, डॉ. रामकुमार, बहन सिमरन जी, विभाग मंत्री श्री राम सेवक, विवेक बब्बर जी, जिला संघ चालक श्री संजय गुप्ता, श्री संजय कंबोज, श्रीमती स्वर्ण कांता मुखीजा, श्री अनिल चावला एवं श्री नीरज जी (सूर्या साड़ी, चांदनी चौक), पूर्व निगम पार्षद श्री यशपाल जी एवं क्षेत्र के बहुत से गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। सबसे पहले सभी बारातियों को प्रातः पकोड़े चाय का जलपान करवाया गया एवं बाद में दोपहर को बहुत सुंदर भोजन की व्यवस्था रही।

बैंड बाजे के साथ पांचों दूल्हों को शाही बग्गी में बिठाकर बारात निकाली गई। बाद में लड़का लड़की के पिता की मिलनी करवाई गई। उसके बाद बहुत सुंदर जयमाला का कार्यक्रम करवाया गया एवं वैदिक सनातन रीति से फेरे करवाए गए।

सभी बेटियों को उपहार स्वरूप बेड, गद्दा, अलमारी, डिनर सेट, सूटकेस, 11 सूट साड़ी एवं बहुत सारी वस्तुएं दी गईं।

कार्यक्रम की विशेषता प्लास्टिक का उपयोग न के बराबर रहा स्टील की प्लेटों में भोजन करवाया गया। सामूहिक विवाह कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए श्री गौरी शंकर मंदिर के प्रधान श्री सुभाष ग्रोवर एवं उनकी टीम , सभी दानदाताओं ,सेवा भारती तिलक जिले के कार्यकर्ताओं, शिक्षिकाओं तथा समाज की जनशक्ति को हार्दिक शुभकामनाएं। ❐

# बच्चे गए टॉफी और फ्रुटी के 'घर'

गत 7 जनवरी को सेवा भारती दिल्ली के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल की सुपुत्री रीतिका जैन जी ने किड जेनिया (Mata JIWANI Bai Kanya chatriawas) में बच्चों को वहां की गतिविधियों से अवगत कराया। बच्चों को पारले जी बिस्किट, टॉफी और फ्रुटी कैसे बनाई जाती है, की विधि दिखाई गई।

बच्चों ने पायलट का भी अनुभव लिया साथ में सर्जरी कैसे होती है, इसकी भी जानकारी ली। आग बुझाने के लिए भी कैसे अपने को तैयार होना चाहिए, इन सब को अच्छी तरह से देखा और सीखा। ❐

# सेवा केन्द्र का उद्‌घाटन

गत 19 जनवरी को आजादपुर में बालवाड़ी केंद्र का शुभारंभ हुआ। सेवा भारती की मुखर्जी नगर जिला इकाई द्वारा शुरू किया गया यह बालवाड़ी केंद्र पाकिस्तान से आए हिन्दू शरणार्थियों के लिए है। इसमें बालवाड़ी, बाल संस्कार, कोचिंग कक्षा की व्यवस्था है। इस केन्द्र का निर्माण कार्य जनवरी माह में शुरू हुआ था। उद्‌घाटन के अवसर पर पूजन हुआ। सर्वश्री सुरेन्द्र जी, सुरेश जी, महेश जी, रतनलाल जी जैसे वरिष्ठ कार्यकर्ता उपस्थित थे। ❐

# कार्यकर्ताओं ने किए श्रीराम के दर्शन

सेवा भारती मुखर्जी नगर जिले के कार्यकर्ता 5 जनवरी को अयोध्या गए और श्रीरामलला जी के दर्शन के किए। इसके साथ ही सरयू नदी में स्नान और हनुमान गढ़ी में दर्शन-पूजन भी किया। इसमें कार्यकर्ताओं के साथ भजन मंडली की बहनें भी शामिल थीं। सुरेश जी, सुरेन्द्र जी, विरेन्द्र जी, देवेन्द्र जी और दीपक जी ने इस यात्रा को सफल बनाने में बड़ी भूमिका निभाई। ❐

## शाहदरा और मयूर विहार जिले में स्वास्थ्य शिविर

गत दिनों सेवा भारती और नेशनल मेडिकोज आॅर्गनाइजेशन (एन.एम.ओ.) के प्रयासों से शाहदरा जिले में 14 स्वास्थ्य शिविर लगाए गए। सभी शिविरों का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। भोलानाथ नगर में शिक्षिकाओं के साथ विनीता जी व नरेश जी, आनंद विहार नगर में शिक्षिकाओं के साथ शांतिलाल जी व अनिल जी, आनंद विहार जेजे कैंप में शुकदेव जी, संगीता जी व माया रानी जी, विवेक विहार नगर में हेमा शर्मा जी, मधुर बंसल जी, निर्मल दीदी व रीना जी उपस्थित रहे। कृष्णा नगर में विभाग से रामकरण जी का साथ मिला। कार्यकारिणी के सभी सदस्यों, शिक्षिकाओं तथा निरीक्षिका सभी की उपस्थिति शत प्रतिशत रही। सभी की सहभागिता के कारण यह आयोजन बहुत सफल रहा। मयूर विहार जिले में पांच स्थानों पर स्वास्थ्य शिविर लगे। ❒

## मकर संक्रांति पर हवन

गत 14 जनवरी को मकर संक्रांति के उपलक्ष में शाहदरा जिले में हवन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें समस्त शाहदरा कार्यकारिणी, सभी शिक्षक, शिक्षिकाएं निरीक्षिका व सेवित जन उपस्थित रहे। प्रसाद में सभी को मूंगफली, रेवड़ी बांटी गई। शाहदरा कार्यकारिणी की ओर से सभी शिक्षिकाओं को टिफिन बॉक्स व शॉल भेंट स्वरूप दिए गए। ❒


# BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

**Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires**
(Black and Galvonised)

**Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires**
(Black and Galvonised)

**H.B. HHB & G.I. WIRES**

**Bansal Wire Industries Ltd.**
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

# विज्ञापन के लिए आग्रह

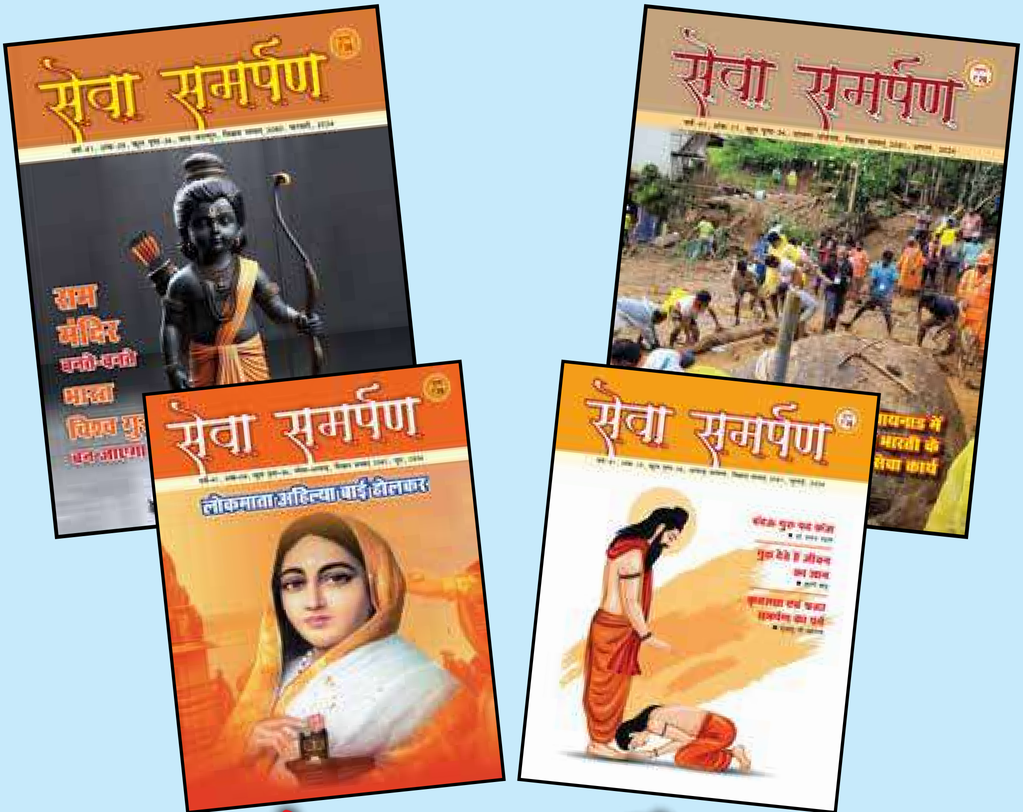


# सेवा समर्पण

'सेवा समर्पण' पत्रिका समाज एवं संस्कृति के प्रति समर्पित, प्रतिष्ठित वर्ग, कार्यकर्ता एवं युवा वर्ग के बीच पिछले 41 वर्ष से 'नर सेवा-नारायण सेवा' के मूल मंत्र को लोकप्रिय बना रही है। इस पत्रिका द्वारा परिवार प्रबोधन, भारतीय जीवन शैली और संस्कारों से युक्त समसामयिक विषयों के साथ-साथ बच्चों, युवा वर्ग एवं महिलाओं संबंधी विषय सामग्री के द्वारा स्वावलम्बन, शिक्षा और संस्कारों को जन-जन तक पहुंचाने का विशेष कार्य हो रहा है। समय-समय पर किसी एक बिन्दु को केन्द्रित कर विशेषांक निकालने की योजना रहती है। आपसे प्रार्थना है कि अपने प्रतिष्ठान का विज्ञापन प्रकाशित कराएं और 50 हजार पाठकों तक अपनी पहुंच बनाएं। यह पत्रिका सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, पुस्तकालय, व्यापारी वर्ग, कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र, अन्य गैर-सरकारी संगठनों, अस्पताल इत्यादि स्थानों पर जाती है।

**संपर्क करें-**

**सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001**

**फोन - 011-23345014-15**

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 10-11 फरवरी, 2025, प्रकाशन तिथि-6-7 फरवरी, 2025
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नंबर
DL(ND)-11/6188/2025-27


# "AGARWAL PACKERS AND MOVERS LTD."

(नर सेवा - राष्ट्र सेवा)

APML

## Nindra Daan Kendra for Truck Chaalak

(A Unique Concept to reduce Accidents on Roads by Trucks)

(ट्रक ड्राईवर देश का आंतरिक सिपाही है)

- 4,12,432 accidents happened yearly in India.
- Out of these accidents 1,53,972 lost their lives.
- Our Kendra saving 21 lives monthly on road to avoid sleep deprivation and stress.
- Empowering Drivers with respectful environment to provide them sound sleep with safe and secure parking space along with free barber, washroom facilities and all are free.

## Pran Vayu Vahan

(कोविड के समय चल चिकित्सा)

- Modified trucks into "Oxygen Providers Van" during highest peak of COVID -II.
- Container converted into clinic within 24hrs.
- It is equipped with all facilities i.e. Oxygen cylinder, Beds, Oxygen Concentrator etc.
- Saved 543 Lives to provide Oxygen to highly vulnerable patients in association with Sewa Bharti.

## Community Empowerment

(सामाजिक समरसता और अंत्योदय का जीवंत उदाहरण)

- Reducing inequalities to provide access to socially backward people to build temple of Sant Shiromani Kabir Ji Maharaj in Nalwa (Hisar) for their Spiritual well beings.
- Providing livelihood and skills to differently abled and financially backwards.
- Girl empowerment.
- Education to highly vulnerable children from villages and tribes.
- Adopted approach to reduce Carbon Emission to conserve environment.

09 300 300 300 www.agarwalpackers.com


मुद्रक/संपादक/प्रकाशक: डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।